मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

आषाढ़-सावन संवत् नानकशाही ५५५ जुलाई 2023 वर्ष १६ अंक ११

गुरुद्वारा श्री बंगला साहिब, नई दिल्ली

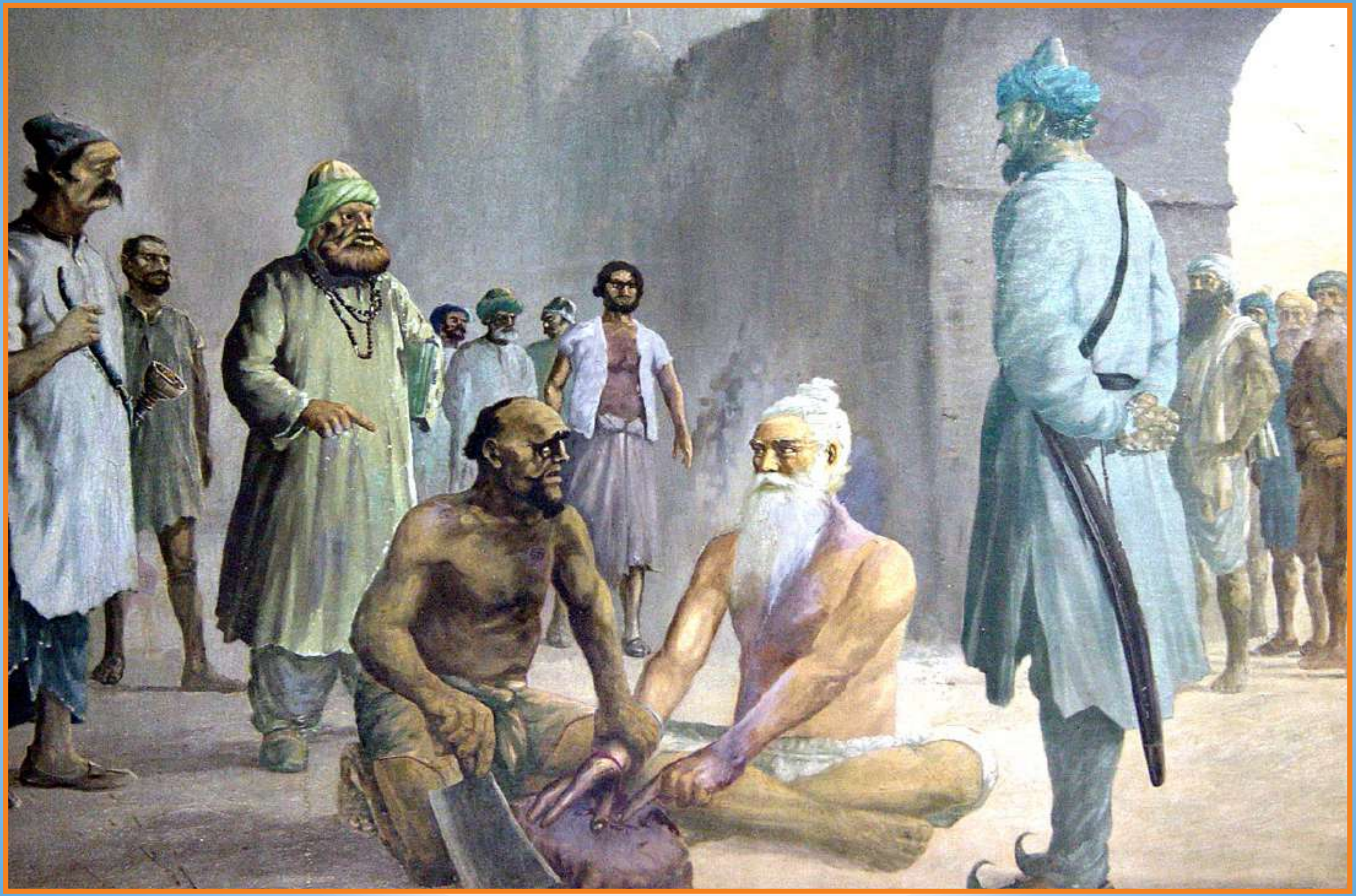

भाई मनी सिंघ जी का बंद-बंद काट कर शहीद किये जाने का दृश्य

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आषाढ़-सावन, संवत् नानकशाही 555
वर्ष 16 अंक 11 जुलाई 2023

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का विराट व्यक्तित्व 8
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर

आध्यात्मिक शक्ति-सम्पन्न बाबा अटल राय जी 11
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल

. . . भाई मनी सिंघ जी 13
-डॉ. मनजीत कौर

पंचम पातशाह (कविता) 16
-डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक

सिक्ख पंथ के महान शहीद भाई तारू सिंघ जी 17
- डॉ. मनिंदर सिंघ

सेवक कउ निकटी होइ दिखावै 25
-डॉ. परमजीत कौर

. . . नानक निरमल पंथु चलाइआ 29
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की आठ पहरी मर्यादा 36
-ज्ञानी मोहन सिंघ उरलाणा

खबरनामा 44

गुरबाणी विचार

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में सावन मास की सुहावनी ऋतु और इससे संबंधित प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृश्य-चित्रण तथा बिंबावली के प्रसंग में आत्मा की प्रभु-मिलाप की इच्छा के साथ-साथ गुरमति मार्ग के अनुरूप इसके लिए दिशा-निर्देश बख्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि जैसे सावन मास में वनस्पति रस से भरपूर हो जाती है वैसे ही रूहानी मार्ग पर चलने वाली जीव-स्त्री के लिए प्रभु-भक्ति के मार्ग में भी ऐसा ही पड़ाव आता है जब उसका प्रभु के कमल रूपी सुंदर चरणों के साथ प्यार बन जाता है अथवा उसे प्रभु-चिंतन-मनन में रस आने लगता है। उसका मन सदैव मालिक के रंग में रंग जाता है और वह प्रभु-नाम को अपने जीवन का आधार बना लेती है। उसे सांसारिक विषय-विकारों के रंग में झूठ अथवा उनके अस्थायी होने का आभास हो जाता है और ये उसे राख रूपी प्रतीत होते हैं। उसको प्रभु-नाम रूपी अमृत बूंद के सुहावनी होने का अनुभव होता है और यह साधु-जनों की संगत में ही पी जा सकती है, ऐसा तथ्य ज्ञात हो जाता है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस प्रभु के संग से सारी वनस्पति ने प्रफुल्लित होना है, उस प्रभु का अंत मनुष्य-मात्र नहीं पा सकता। ऐसे सक्षम प्रभु से मिलने के लिए मेरा मन अभिलाषी है, परंतु वह मात्र चाहने से नहीं बल्कि उसी की कृपा से मिलता है। जीव-आत्मा महसूस करती है कि उसने अभी मालिक को पाया नहीं, परंतु जिन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों ने उस मालिक को प्राप्त कर लिया है उन पर मैं सदैव बलिहार जाती हूं। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ असहाय पर भी कृपा करो। गुरु-शबद द्वारा आप मेरी तकदीर संवारने वाले हो। सावन का महीना उन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों के लिए ही शीतल व सुहावना है जिन्होंने अपने हृदय रूपी गले में प्रभु-नाम रूपी माला पहन ली है।

संपादकीय

'सिक्ख' शब्द के साथ वर्ण-भेद की पहचान ग़ैर-सैद्धांतिक है

गत दिनों कुछेक रचनाओं/पुस्तकों में 'ब्राह्मण सिक्ख' शब्द का प्रचलन सामने आया है। 'गुरु जी के ब्राह्मण सिक्ख शहीद' लिख कर सिक्ख शहीदों को जात-पांत में बाँटने की कोशिश की गई है। सिक्ख साहित्य में ऐसे शब्दों की घुसपैठ सिक्ख धर्म को वर्ण-विभाजन की तरफ धकेलने की साजिश प्रतीत होती है। ऐसा चाहे सैद्धांतिक नासमझी के कारण हुआ हो सकता है या फिर सिक्ख पंथ-विरोधी सोची-समझी साजिश का हिस्सा हो सकता है, दोनों हालात में ऐसा सैद्धांतिक हमला सिक्ख पंथ के लिए घातक है।

इस मसले के प्रति गंभीर होना इसलिए भी ज़रूरी हो जाता है, क्योंकि गत दिनों सोशल मीडिया पर एक सिक्ख पंथ-विरोधी जत्थेबंदी की एक आवाज़ की रिकार्डिंग सुनी गई, जिसमें कहा जा रहा है कि सिक्ख साहित्य का इस्तेमाल कर सिक्खों से सिक्खों की पहचान को ही झपट लेना है।

अब यदि इस आवाज़ की रिकार्डिंग की कड़ी को 'ब्राह्मण सिक्ख' की कड़ी के साथ जोड़ कर देखें तो बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। यदि ऐसे मसलों के प्रति संजीदगी न दिखाई गई तो ऐसे लोग भविष्य में हमें ब्राह्मण सिक्ख लिखने के साथ-साथ क्षत्रिय सिक्ख, वैश्य सिक्ख, शूद्र सिक्ख आदि लिख कर हमें जात-पांत, वर्ण-विभाजन की उसी दलदल में ला खड़ा करेंगे, जिस दलदल में से हमें निकालने के लिए हमारे गुरु साहिबान ने लंबा संघर्ष किया था।

सिक्ख इतिहास, परंपरा, मर्यादा आदि किसी पक्ष से भी 'ब्राह्मण सिक्ख' शब्द उचित नहीं माना जा सकता। पंथ-प्रवानित 'सिक्ख रहित मर्यादा' में सिक्ख की तारीफ़ (पहचान) लिखी है- ''जो स्त्री या पुरुष एक अकाल पुरख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब तक), श्री गुरु ग्रंथ साहिब और दस गुरु साहिबान की बाणी एवं शिक्षा व दशमेश जी के अमृत पर निश्चय रखता है तथा किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिक्ख है।'' (पृष्ठ ९)

इससे आगे अमृत संस्कार के 'ट' इंदराज में ख़ालसे की रहित के बारे में बताते हुए लिखा

है– . . .''आज से आपने 'सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ' है और खालसा पंथ में शामिल हुए हो । . . . आप पिछली कुल, किरत, कर्म, धर्म का त्याग कर अर्थात् पिछली जात-पांत, जन्म, देश, मज़हब का ख़्याल तक छोड़ कर केवल खालसा बन गए हो।'' (पृष्ठ २९-३०)

'सिक्ख रहित मर्यादा' की उक्त दो उदाहरणों से सैद्धांतिक नुक्ता स्पष्ट हो जाता है कि सिक्ख किसी अन्य धर्म को नहीं मानता और कोई भी व्यक्ति सिक्ख धर्म ग्रहण करने के बाद पिछली जाति, जन्म, मज़हब (धर्म) को मानना तो दूर की बात, उसका ख़्याल तक नहीं करता। सतिगुरु के घर जन्म लेने से तात्पर्य यही है कि पिछली कुल, किरत, कर्म, धर्म का त्याग कर नये सिरे से गुरु साहिब जी के मतानुसार जीवन बनाना।

सिक्ख धर्म धारण करने के बाद पिछले धर्म के त्याग की जो बात 'सिक्ख रहित मर्यादा' में आई है वह श्री गुरु नानक देव जी के समय से चली है। भाई गुरदास जी लिखते हैं–

चरन धोइ रहरासि करि चरणाम्रितु सिखां पीलाइआ ।. . .
. . . चारि वरनि इकु वरनु कराइआ। *(वार १ : २३)*

अर्थात् गुरु जी ने चरण धोने की रीति कर चरणामृत (चरण पाहुल) सिक्खों को पिलाया (अर्थात् नम्रता और भक्ति सिखायी। चार वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का भेद ख़त्म कर एक वर्ण किया अर्थात् मानवता सिखायी।

भाई गुरदास जी और लिखते हैं :

मजहब वरन सपरसु करि असटधातु इकु धातु सु खेतै। *(वार ३९ :५)*

जिस प्रकार आठों धातुएं एक पारस को स्पर्श कर सरलता से एक धातु (सोना) हो जाती हैं, इसी प्रकार चारों मजहब, चारों वर्ण गुरु के साथ मिल कर गुरमुख बन जाते हैं अर्थात् पिछला मज़हब-वर्ण ख़त्म हो जाता है।

जब भाई मंझ जी ने श्री गुरु अरजन देव जी से सिक्खी की दात (रहमत) माँगी थी तो सतिगुरु जी ने फरमान किया था– ''भाई ! लसिक्खी पर सिक्खी नहीं टिकती !'' कहने से तात्पर्य, पहले अपने पिछले विश्वास (सखी-सरवर) का त्याग करों।''

अत: स्पष्ट है कि श्री गुरु नानक देव जी महाराज के समय से ही सतिगुर कै जनमिआं का, गुरु धारण करने वालों का पिछला धर्म, वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) आदि स्वाभाविक रूप से ख़त्म हो जाता था और मर्यादागत यह त्याग लाज़िमी भी है, क्योंकि सिक्ख धर्म एक

निर्मल पंथ है, न्यारा पंथ है। सिक्ख धर्म का अंग बन कर पिछले धर्म की मिलावट कदाचित स्वीकार्य नहीं।

हम धर्मों के इतिहास में देखते हैं कि जब भी कोई नया धर्म अस्तित्व में आता है तो स्वाभाविक है कि वह पहले से धरती पर मौजूद किसी धर्म में से ही एक नयी विचारधारा के रूप में प्रकट होता है। उस नये धर्म के पैरोकार बनने वाले अपने पहले धर्म की विचारधारा, उसके विश्वास का त्याग कर नये धर्म के नए विश्वास को धारण करते हैं। ईसाई धर्म और इसलाम धर्म यहूदी धर्म में से निकले हैं। अब ईसाई, ईसाई ही है और मुसलमान, मुसलमान ही है। धर्म के अंदरूनी विश्वासों की भिन्नताओं के कारण सुन्नी मुसलमान या शिया मुसलमान तो हैं, परन्तु किसी ने आज तक 'यहूदी मुसलमान' शब्द नहीं सुना होगा। किसी एक धर्म की पहचान एक ही जगह, एक ही नाम से हो सकती है– यहूदी या मुसलमान, ब्राह्मण या सिक्ख।

जिस प्रकार धर्मों के इतिहास में 'यहूदी ईसाई' या 'यहूदी मुसलमान' कोई शब्द नहीं, उसी प्रकार 'ब्राह्मण सिक्ख' भी विवेकहीन और ग़ैर-सैद्धांतिक शब्द है।

सिक्खी का किसी जाति, वर्ण, धर्म के साथ कोई विरोध नहीं। सभी का सम्मान है, मगर सैद्धांतिक अवज्ञा कदाचित स्वीकार नहीं। सिक्ख केवल सिक्ख ही है। हाँ, सिक्ख शब्द के साथ भौगोलिक या व्यवसायिक पहचान तो जुड़ सकती है, जैसे– सिंधी सिक्ख, नानकपंथी सिक्ख, सिकलीगर वणजारे सिक्ख आदि, मगर कोई अलग धार्मिक पहचान सिक्ख के साथ जोड़ना सैद्धांतिक उल्लंघन है। सिक्ख साहित्य में ऐसे शब्दों की घुसपैठ से सिक्ख पंथ को सचेत होने की ज़रूरत है।

-सतविंदर सिंघ फूलपुर

९९१४४-१९४८४

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का विराट व्यक्तित्त्व

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

अष्ठम पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का प्रकाश ८ सावन, संवत् १७१३ (१६५६ ई.) को श्री कीरतपुर साहिब, जिला रूपनगर में सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब तथा माता क्रिशन कौर जी के घर हुआ। आप ६ कार्तिक, संवत् १७१८ (१६६१ ई.) को गुरुआई पर विराजमान हुए। पाँच वर्ष की आयु में आपका गुरु-पद पर शोभायमान होना कतिपय लोगों के लिए आश्चर्यजनक घटना थी।

गुरु-घर का विरोध करने वाले धीरमल्ल एवं रामराय के पक्षधर लोग गुरु जी की अल्पायु को आधार बनाकर संगत में संशय व भ्रांतियां पैदा करने का कुत्सित प्रयास कर रहे थे। इस सबके बावजूद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने दृढ़ता व परिपक्वता के साथ गुरुआई की जिम्मेदारी (१६६१-१६६४ ई.) निभाई और सिक्खों को आगवानी दी। गुरु जी शांत स्वभाव के मालिक तो थे ही, साथ ही वे सेवा व परोपकारी स्वभाव के मालिक भी थे। वे निरंतर प्रभु-जाप में लीन रहते थे। उनकी दयालु दृष्टि एवं दया-भावना की चर्चा चहुँ ओर होने लगी थी । उनकी लोकप्रियता व प्रसिद्धि से रामराय तो चिढ़ता ही था, बल्कि औरंगजेब भी उनसे भयभीत था। गुरु जी ने गुरुआई की जिम्मेदारी संभालने के बाद सिक्ख धर्म का प्रचार लगातार जारी रखा।

दूसरी तरफ गुरु जी की छोटी आयु का हवाला देते हुए रामराय ने स्वयं को गुरु प्रचारित करना शुरू कर दिया था। कई मसंदों ने (लालचवश) उसका साथ देना शुरू कर दिया और संगत में उसे ही असली गुरु दर्शाने की कोशिश की, परंतु यह चालाकी अधिक देर तक न चल सकी और सिक्ख संगत ने उसे गुरु मानने से मना कर दिया। संगत को भी श्री गुरु हरिराय साहिब का आदेश याद था कि रामराय के साथ कोई सम्बंध नहीं रखना। उसने पवित्र गुरबाणी को बदलने का घोर अपराध किया है।

रामराय ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के विरुद्ध निजी विरोध का अभियान शुरू कर दिया और उनकी महान व निर्मल शख्सियत के खिलाफ ग़लत शब्दों एवं तथ्यों का इस्तेमाल करने लगा । गुरु जी एक महान संकल्प, दृढ़ निश्चय के साथ अपना दायित्व निभाते रहे। गुरु जी की परख के लिए उसने गाहे-बगाहे कुछ पंडित (माहिर) भी उनके दरबार में भेजे।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

दिल्ली जाते समय पंजोखरा (अंबाला के निकट) में एक ब्राह्मण पंडित लाल चंद ने गुरु जी पर व्यंग्य कसा– ''आपका नाम 'हरिक्रिशन' है। क्या आप गीता-पाठ के अर्थ बता सकते हैं?'' उसका प्रश्न सुनकर गुरु जी मुस्कराए। गुरु जी ने पंडित लाल चंद से कहा– ''आप हमारे किसी सिक्ख से अपने प्रश्न का उतर प्राप्त कर लें, आपकी संतुष्टि हो जाएगी।'' पंडित लाल चंद छज्जू झीवर नामक एक व्यक्ति को गाँव में से लाया, जिसे गाँववासी अल्पज्ञ मानते थे। छज्जू झीवर गुरु जी के सामने उपस्थित हुआ। गुरु जी ने छज्जू पर अपनी दिव्य दृष्टि डाली तथा उसे गीत-पाठ के अर्थ उस ब्राह्मण को समझा देने के लिए कहा। जिसे लोग अनपढ़, अज्ञानी समझते थे, वही छज्जू गुरु जी की कृपा से गीता-पाठ की व्याख्या बोलकर करने लगा। उस ब्राह्मण ने तुरंत गुरु जी के समक्ष शीश निवाया और अपने अहंकार तथा भेदभाव के विचारों का परित्याग करने का वादा किया। वह सदा के लिए गुरु जी का श्रद्धालु बन गया। वह समझ गया कि यदि गुरु-घर का अदना-सा सेवक गुरु जी की कृपा से विद्वान बन सकता है, तब गुरु जी स्वयं दिव्यता में कम कैसे हो सकते हैं! गुरु जी तो महान हैं, विराट और विशाल व्यक्तित्व के मालिक हैं।

रामराय जब मसंदों की मदद से भी गुरुआई प्राप्त करने में सफल न हो सका, तब उसने दिल्ली जाकर बादशाह औरंगजेब से सहायता माँगी। उसने कहा, ''बादशाह जी! मुझे न्याय दिलाया जाए और 'हरिक्रिशन' को शाही दरबार में तलब किया जाए।'' औरंगजेब ने ध्यानपूर्वक रामराय की बातें सुनी और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली आने का संदेश भेज दिया।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को आदेश दिया था कि आपने कभी भी औरंगजेब के समक्ष नहीं जाना है और न ही उसकी धमकियों से डरना है।

सच्चे पातशाह का आदेश सदैव सर्वोपरि होता है। उनके आदेश की रोशनी में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने दिल्ली जाकर बादशाह औरंगजेब से मिलने से मना कर दिया। इस पर औरंगजेब अपमान की ज्वाला में तड़पने लगा। मामला सुलझाने के लिए मिर्जा राजा जय सिंह ने साहसी बन कर एक योजना बनाई और गुरु जी से निवेदन किया कि ''आप बेशक औरंगजेब से न मिलें, परंतु दिल्ली अवश्य आएं। बादशाह के दरबार में न जाएं, उसके बंगले (गृह) में आपका निवास रखा जाएगा।''

मिर्जा राजा जय सिंह ने दीवान परस राम को भेजा कि वह अति सम्मान के साथ गुरु जी को दिल्ली लेकर आए। ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार, ''गुरु जी ने फ़रमान किया कि हम राजा जय सिंह के प्रेम व वात्सल्य के कारण जा रहे हैं, किंतु हम बादशाह से भेंट नहीं करेंगे।''

गुरु जी ने दिल्ली को गमन किया तथा राजा जय सिंह के गृह में निवास किया। वहां संगत को दर्शन देकर निहाल किया।

औरंगजेब के कहने पर मिर्जा राजा जय सिंह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की यह परीक्षा लेना चाहता था कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब वाकई आध्यात्मिक शक्ति से ओत-प्रोत हैं।

राजा जय सिंह के महल में राजा की रानी तथा दासियों को एक जैसे वस्त्र पहनने को कहा गया, ताकि गुरु जी से उन सब में से रानी की पहचान करवाई जा सके। जब गुरु जी के समक्ष वे सभी उपस्थित हुईं तब गुरु जी ने अपने हाथ में पकड़ी छड़ी द्वारा संकेत कर रानी की पहचान बता दी। फिर गुरु जी रानी की गोद में जा बैठे। पूरा वातावरण ममतामय हो उठा और रानी की आँखों से वात्सल्य की अश्रुधारा बह निकली। राजा जय सिंह गुरु जी के समक्ष तन-मन से समर्पित हो गया। उसने बादशाह को गुरु जी की काबलियत के बारे में जा बताया। सुनकर औरंगजेब का मन बदल गया तथा उसने रामराय को झूठा, फरेबी कहकर उसका दावा खारिज कर दिया। रामराय को मुँह की खानी पड़ी। वो वापस दून की घाटी में चला गया।

दिल्ली में कुछ समय के लिए आठवें पातशाह जी धर्म-प्रचार के कार्य की आगवानी व निगहबानी करते रहे। प्रतिदिन दीवान सजता तथा श्रद्धालु गुरु जी के दर्शन-दीदार कर निहाल होते। इस प्रचार से सिक्ख धर्म की विचारधारा का दिल्ली में खूब प्रसार हुआ। गुरु जी की शरण में जो भी कोई भेंट लेकर आता, गुरु जी उसे जरूरतमंदों में बांट देते।

उन्हीं दिनों दिल्ली एवं इसके आस-पास के क्षेत्रों में चेचक नामक रोग फैल गया। यह छूत का एक खतरनाक रोग हुआ करता था। गुरु जी इस रोग की भयानकता की परवाह न करते हुए स्वयं पीड़ित रोगियों का इलाज व सेवा करने लगे। यह रोग महामारी का रूप धारण कर बहुत-से लोगों की जान लेने लगा। अपनी जान की फिक्र न करते हुए श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली के मुहल्लों में पहुंच कर घर-घर जाकर लोगों का दुख हरने में जुटे रहे। लोगों को राहत पहुंचाने हेतु उन्होंने दसवंध के धन का भी इस्तेमाल किया।

ऐसे हालात में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब भी चेचक की चपेट में आ गए। वे भी बीमार हो गए। गुरु जी अपना अंतिम समय निकट आया जानकर संगत को नवम् गुरु के बारे में संकेत रूप में बताते हुए फरमान कर गए- ''बाबा. . . बकाले!'' फिर गुरु जी ज्योति-जोत समा गए। यह समय ३ वैशाख, संवत् १७२१ का था।

आध्यात्मिक शक्ति-सम्पन्न बाबा अटल राय जी

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

गुरमति में अकाल पुरख के हुक्म और रज़ा को संपूर्ण एवं सर्वाधिक महत्व दिया गया है। गुरमति का मूलभूत सिद्धांत है कि सारी सृष्टि अकाल पुरख ईश्वर की आज्ञा और इच्छा से चल रही है। यहाँ ईश्वर की इच्छा को इतना उच्च एवं सर्वोपरि माना गया है कि ईश्वर की बनाई गई व्यवस्था में फेरबदल करने वाली अथवा व्यवधान डालने वाली गतिविधियों, चमत्कारों या करामात संबंधी क्रियाकलाप को पूरी तरह से निषिद्ध क़रार दिया गया है। गुरमति के अनुसार चमत्कार आदि दिखलाना ईश्वर की सृष्टि के सहज कार्य-प्रवाह में विघ्न उत्पन्न करना है। सिक्ख इतिहास में चमत्कार-खंडन की व्यवहारिक मिसाल के संदर्भ में बाबा अटल राय जी का जीवन-प्रसंग विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

बाबा अटल राय जी : जन्म एवं बालपन

बाबा अटल राय जी छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पाँचवीं संतान थे। आपका जन्म सम्वत् १६७६ वि० अर्थात् सन् १६१९ ई. में, श्री अमृतसर साहिब में हुआ।

आप नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी के बड़े भाई थे। इस प्रकार आप चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी के प्रपौत्र तथा पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के पौत्र थे। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आपके भतीजे लगते थे।

बाबा अटल राय जी बड़े मस्त-मौला स्वभाव के मालिक थे। सारा-सारा दिन आप अपने बाल-सखाओं के साथ खेलते-कूदते रहते। तमाम दिन हँसते-खेलते, खाते-पीते गुज़ार देते।

छोटी आयु होने के बावजूद भी आप अद्भुत आध्यात्मिक एवं आत्मिक शक्ति से सम्पन्न थे। आप स्वाभाविक रूप से जो भी कहते वो बात प्राय: पूरी हो जाती, इसी लिए लोग आपको 'बाबा जी' कहकर बुलाते थे।

चमत्कारपूर्ण घटना

बाबा अटल राय जी अभी मात्र नौ वर्ष की आयु ही पूरी कर पाये थे कि एक दिन वह घटना घटी जो गुरमति के चमत्कार-विरोधी रुख के संदर्भ में सदैव के लिए इतिहास में दर्ज हो गयी।

एक दिन बाबा अटल राय जी अपने बाल-

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३१६-०१६४१*

साथियों के साथ खेल रहे थे। खेल कुछ लम्बा खिंच गया और अंधेरा घिर आया।

बाबा अटल राय जी के मित्र मोहन ने बारी देनी थी। अंधेरे के कारण खेल आगे नहीं चल सकता था, इसलिए तय हुआ कि मोहन सुबह आकर अपनी बारी देगा। उसी रात एक हादसा हो गया और साँप के डंसने से मोहन का देहांत हो गया।

अगली सुबह सभी बच्चे खेल आगे बढ़ाने के लिए इकट्ठा हुए। मगर यह क्या? बारी तो मोहन की थी और मोहन अभी तक आया ही नहीं था। खेल कैसे शुरू हो? जब देर तक इंतज़ार करने के बावजूद मोहन न आया तो बाबा अटल राय जी और बाकी बच्चे मोहन के घर जा पहुँचे।

मोहन की लाश अरथी पर पड़ी हुई थी। उसके माता-पिता व अन्य सम्बंधी विलाप कर रहे थे। बाबा अटल राय जी ने अबोध रूप से अरथी पर पड़ी मोहन की लाश को झिंझोड़ते हुए कहा– ''मोहन उठ! चल, अपनी बारी दे!'' इतना कहना था कि मोहन उठकर बैठ गया और बाहर आकर खेलने लगा। यह चमत्कार देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए।

छठम पातशाह की नाराज़गी

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को जब बाबा अटल राय जी के इस चमत्कार की खबर मिली तो वे गंभीर हो गये और बाबा अटल राय जी को बुला कर इस घटना पर नाख़ुशी प्रकट की। गुरु जी ने कहा– ''साहिबजादे ! तुमने करामात दिखा कर ईश्वर की आज्ञा और इच्छा का निरादर किया है।''

बाबा अटल राय जी का अकाल चलाणा

बाबा अटल राय जी पिता-गुरु के वचनों का तात्पर्य समझ गये और एक स्थान (वर्तमान में कौलसर सरोवर के पूरबी किनारे) पर जा बिराजे और १० सावन, संवत् १६८५ विक्रमी अर्थात् जुलाई, सन् १६२८ ई. को मात्र नौ वर्ष की आयु में (स्वेच्छा से) अकाल चलाणा कर गये।

बाबा अटल! पक्कियां-पकाइयां घल्ल!!

बाबा अटल राय जी नौ वर्ष की आयु में अकाल चलाणा कर गए थे, अत: इस स्थान पर नौ-मंजिला गुरुद्वारा साहिब की इमारत का निर्माण करवाया गया। यह गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी के नाम से प्रसिद्ध है और श्री अमृतसर साहिब में श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के निकट सुस्थित है।

सभी की इच्छाएँ पूर्ण करने वाले बाबा अटल राय जी के बारे में यह कथन मशहूर है :

बाबा अटल! पक्कियां-पकाइयां घल्ल!!

महान् विद्वान और अमर शहीद भाई मनी सिंघ जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

सिक्ख धर्म में की जाने वाली अरदास की पावन पंक्ति ''जिन्हां सिंघा सिंघणियां ने धर्म हेत सीस दित्ते, बंद-बंद कटाए . . .'' बोलते हुए अथवा श्रवण करते हुए एक महान शख्सियत की तस्वीर सहज ही नेत्रों के समक्ष उभर कर आती है, जो मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ जाती है, वो तस्वीर है– भाई मनी सिंघ जी की। इन्हें नत्मस्तक हो श्रद्धा-भावना से हृदय पुकार उठता है– धन्य हैं ऐसे जांबाज सिंघ! ऐसे गुरमुखों के संदर्भ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी उनके महान चरित्र को बाखूबी चरितार्थ करती है कि गुरमुखों का जीवन और मरण दोनों ही ईश्वर की दरगाह में प्रवान है– *''गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ।।''*

भाई मनी सिंघ जी का जन्म १६४४ ई. में में हुआ था। आपके दादा भाई बल्लू जी छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के प्रसिद्ध सिक्ख जरनैल थे। भाई मनी सिंघ जी का बचपन का नाम 'मनीराम' था। आपके जन्म-संवत् का प्रथम हवाला मुलतानी-सिंधी बही के अनुसार इस प्रकार प्राप्त होता है :-

''बधाई ली मनी राम की, बेटा माई दास का, पोता बलू का, पड़पोता मूले का संवत् १७०१ बरखे माह चेतर सुदी दुआदसी रविवार शुभ वार घड़ी हुआ, प्रोहत बोहथ भट को माना, गुरु की कड़ाही की।''

(शहीद बिलास, पृष्ठ २ से उद्धृत)

भाई मनी सिंघ जी के पिता जी इन्हें १३ वर्ष की आयु में कीरतपुर साहिब में श्री गुरु हरिराय साहिब के दरबार में लेकर हाजिर हुए। गुरु साहिब ने बालक का सुन्दर मुखड़ा देखकर आशीर्वाद दिया :

''मनीआ, इह गुनीआं होवेगा बीच जग सारे।''

गुरु-दरबार में सेवा करके असीम आनंद की अनुभूति प्राप्त करने वाले भाई मनी सिंघ जी गुरु-घर में ही रुक गए। इस बीच इनका विवाह भाई लखी राय की सुपुत्री बीबी सीतो जी के साथ हुआ। आप सेवा में तत्पर रहते हुए श्री गुरु हरिराय साहिब के ज्योति-जोत समा जाने के पश्चात् श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की सेवा में हाजिर हो गए। उनके ज्योति-जोत समाने के बाद नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की सेवा में बकाला गाँव में हाजिर हुए। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब भारत के पूरबी क्षेत्र में धर्म-प्रचार दौरे से

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

वापिस श्री अनंदपुर साहिब पहुँचे तो भाई मनी सिंघ जी भी श्री अनंदपुर साहिब आ गए। यहाँ रहकर भाई साहिब ने गुरबाणी की पोथियों के उतारे करने तथा करवाने की महान सेवा निभाई।

कश्मीरी पण्डितों की करुणामयी गाथा सुनकर बदले घटनाक्रम में जब नवम् पातशाह दिल्ली में शहीद हो गए, तब भाई मनी सिंघ जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास रहे। इस समय आपकी उम्र ३० वर्ष के लगभग हो चुकी थी। भट्ट सेवा सिंघ ने इस अवस्था में आपकी शख्सियत को इस प्रकार दर्शाया है :

दोहरा।।
आयू पैतीं बरख की मनी सिंघ की आहि।
लिखे लिखाए पोथीआं,
मन महि बहुत उतशाहि।।
कबित्त।।
सेवा सी करंत ते रहंत गुरां पास सदा,
लिख लिख बाणी करे पोथीआं तिआर इह।
पड़दा पड़ांदा ते गिणांदा नहीं आप ताईं,
मन नीवां मत उच्ची इहो दिल धार इह।
हठी तपी पूरा, सिक्खी-सिदक दा पुतला सी,
साखीआं सिदक दीआं करदा उचार इह।
सेवा करी इवें किवें बीत गए बरस कई,
युध दे करन विच वडा हुशिआर इह।
(शहीद बिलास, पृष्ठ ६०-६१)

भाई मनी सिंघ जी उपरोक्त कथनानुसार पोथियों अर्थात् श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लिखारी, तपी, हठी, स्फूर्तिवान, युद्ध-कला में प्रवीण, साखियां श्रवण करवाने वाले कथाकार एवं विश्वसनीय प्रीतवान सिक्ख थे।

डॉ. रूप सिंघ द्वारा सम्पादित पुस्तक 'प्रमुख सिक्ख शखसीअतां' में भाई मनी सिंघ जी का दसम पातशाह के साथ पाउंटा साहिब जाने तथा रामराय के देहांत के समय देहरादून जाने का वर्णन किया गया है। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पाउंटा-निवास तथा श्री अनंदपुर साहिब वापसी के समय भाई मनी सिंघ जी उनके अंग-संग रहे। आप जी गुरु जी के विश्वासपात्र सिक्ख थे। ज्ञानी गिआन सिंघ ने तो आप जी की गिनती दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवियों में करते हुए लिखा है :

कवी बवंजा थे गुर पास।
उन मैं गणना इन की खास। (पंथ प्रकाश)

खालसा सृजना दिवस पर आप उन भाग्यशाली सिक्खों में से एक थे, जिन्होंने दशम पिता के कर-कमलों द्वारा अमृत-पान किया। 'मनी राम' से 'मनी सिंघ' के रूप में गुरु-दरबार में आपका आदर-सत्कार कई गुना बढ़ गया। आप कलम और तेग के धनी होने के साथ-साथ समय के महान कथावाचक के रूप में भी विख्यात हुए।

भाई मनी सिंघ जी का सारा परिवार- भाई, पुत्र, पोते सिक्खी-आस्था निभाते हुए शहीद हो गए। श्री अनंदपुर साहिब की पहली जंग, जिसमें पहाड़ी राजाओं ने मस्त हाथी को किले का दरवाजा तोड़ने हेतु भेजा था, का मुकाबला

भाई मनी सिंघ जी के सुपुत्र भाई बचित्तर सिंघ ने बड़ी बहादुरी के साथ किया था। इनके भ्राता भाई दयाला जी ने श्री गुरु तेग बहादर जी के संग दिल्ली में शहादत प्राप्त की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आपको श्री अमृतसर साहिब के सिक्खों की विनती पर श्री दरबार साहिब की सेवा-सम्भाल हेतु भेजा था। वहां पहुंच कर आपने गुरु-मर्यादा का प्रवाह चलाया। सिक्खी का प्रचार करने के साथ-साथ अमृत-प्रचार की लहर में भी बढ़ोत्तरी आई। वहां पर आपको ग्रंथी के रूप में भी सेवा निभाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सेवा-सम्भाल का प्रबंध सुव्यवस्थित करने के उपरान्त आपने सिक्खों की विखंडित हो रही शक्ति को एकजुट करने की योजना बनाई। तब ऐसी परिस्थिति बनी हुई थी कि तत्त खालसा एवं बंदई खालसा में अपने-अपने अस्तित्व को लेकर झगड़ा हो गया था। इस झगड़े को हमेशा के लिए समाप्त करने हेतु आपने बहुत ही शालीनता से दोनों पक्षों को विश्वास में लेकर कहा कि 'हरि की पौड़ी' (सरोवर) में दो पर्चियां डालकर निर्णय किया जाएगा। 'तत्त खालसा' वाली पर्ची जल के ऊपर आ गई। 'बंदई खालसा' का 'तत्त खालसा' में विलय करवा दिया, जिससे सारी सिक्ख शक्ति पुन: एकजुट हो गई। इस प्रकार भाई मनी सिंघ जी की गहरी सूझबूझ से अमन-शांति से फैसला हो गया। आपसी विरोध समाप्त हुआ।

दशम गुरु जी ने भाई मनी सिंघ जी से (दमदमा साहिब) तलवंडी साबों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सम्पूर्ण बाणी लिखवाई। इसमें नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी भी दर्ज की गई।

सन् १७३८ ई. की दीवाली पर भाई मनी सिंघ जी ने श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब में संगत का जलसा बुलाने का मन बनाया। जकरिया खान ने इस एकत्रता की इजाजत हेतु एक शर्त रखी कि इसके लिए पांच हजार रुपए टैक्स देना होगा। अंदर से उसने अपने दुष्ट इरादों से यह योजना भी बनायी कि सिक्खों की यह एकत्रता उन्हें सामूहिक रूप से खत्म करने हेतु सरल युक्ति है। उसकी यह योजना थी कि दीपावली की रात घेराबंदी करके सिक्खों के एकत्र जनसमूह को तोपों से उड़ा दिया जाएगा। इस योजना की खुफिया खबर मिलने पर भाई मनी सिंघ जी ने सिक्खों का जलसा करने की योजना रद्द कर दी। योजना असफल हुई देख जकरिया खान बौखला उठा। उसने पांच हजार रुपए टैक्स की मांग कर डाली। भाई मनी सिंघ जी ने उसकी दुष्टाना चालों की वजह से संगत न आने का हवाला देते हुए टैक्स अदा करने से मना कर दिया।

इस पर भाई मनी सिंघ जी को बंदी बना कर लाहौर दरबार में पेश किया गया। जकरिया खान ने इसलाम कबूल करने को कहा। भाई मनी सिंघ जी ने स्पष्ट इन्कार कर दिया। जुर्माना न देने व इसलाम कबूल न करने के कारण

जकरिया खान ने काज़ी को भाई मनी सिंघ जी का बंद-बंद काट कर शहीद करने का आदेश जारी करने का आग्रह किया। इतिहासकार लिखते हैं कि भाई मनी सिंघ जी ने शहादत का मार्ग कबूल करते हुए बुलंद इरादे से कहा कि ''मैं सिक्खी पर अनेक जीवन कुर्बान करने हेतु तैयार हूं।'' काजी ने बंद-बंद काट कर शहीद करने का हुक्म सुनाया और शाही किले के पास मैदान में बंद-बंद काटने हेतु ले गए। इस संदर्भ में एक तथ्य और अत्यन्त विलक्षण है कि जब जल्लाद बंद-बंद काटने हेतु सर्वप्रथम उनकी कलाई पर वार करने लगा तो भाई मनी सिंघ जी उसे चेताते हैं कि क्या तुझे अपने मालिक का हुक्म ढंग से बजाना नहीं आता? बंद-बंद कलाई से नहीं, उंगली के पहले पोर से शुरू होता है। धन्य हैं ऐसे महान आस्थावान सिक्ख, महान योद्धा, जिन्होंने हंसते-हंसते बंद-बंद कटवा कर शहीदी का अमर जाम पीया! उनका सम्पूर्ण जीवन सिक्ख पंथ की अमूल्य विरासत है। वे मुगल हुकूमत द्वारा किए जा रहे जुल्मों को रोकने हेतु निर्भय योद्धा के रूप में हर विकट परिस्थिति में भी डटे रहे। उनका समूचा खानदान सिक्ख पंथ के गौरवमयी आदर्शों की स्थापित हेतु हंसते-हंसते कुर्बान हो गया। ऐसी महान शख्सियत अरदास में अत्यन्त श्रद्धा-भावना से वन्दनीय है, स्मरणीय है। कोटि-कोटि नमन ऐसे अद्वितीय शहीदों को

कविता

पंचम पातशाह

*-डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक**

सबक सच का पढ़ा गए पंचम पातशाह !
राह शहादत की दिखा गए पंचम पातशाह !

सत्य की रक्षा में दी शहादत सबसे बड़ी,
अडोल रह कर दुनिया हिला गए पंचम पातशाह !

नूर चेहरे पर सजा, आँखों में रहमत की चमक,
अंधेरी राह को रौशन बना गए पंचम पातशाह !

बरसता है सहज-संयम गुरु जी की बाणी में,
''तेरा कीआ मीठा लागै'' सिखा गए पंचम पातशाह !

'सुखमनी' की दात से हमको नवाज़ कर,
अज़मत हमारी बढ़ा गए पंचम पातशाह !

भक्तों की बाणी को उन्होंने ऊँचा दिया मुक़ाम,
भेदभाव सारे मिटा गए पंचम पातशाह !

गुरु ग्रंथ साहिब उन्हीं की बदौलत हमें मिला,
रूहानियत की शमा जला गए पंचम पातशाह !

'फ़लक' गुरु की कृपा हम सब पे है हुई,
गुरमति जीवन-जाच सिखा गए पंचम पातशाह !

**मकान नं.-११ सेक्टर-१-ए, गुरु ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना, फोन : ९६४६८-६३७३३*

सिक्ख पंथ के महान शहीद भाई तारू सिंह जी

– *डॉ. मनिंदर सिंह**

शहादत एक ऐसा सिद्धांत है जिसे सिक्खों ने गुरु साहिबान के नक्श-ए-कदम पर चलते हुए, एक परंपरा की भांति गुरु-चरणों में अर्पण किया है। सिक्ख धर्म का 'शहीदी सिद्धांत' विभिन्न संकल्पों के सुमिल से उत्पन्न हुआ है। इसका विश्लेषण करना बहुत कठिन है, परन्तु इसके मोटे-मोटे चिह्न-चक्कर प्रकट किए जा सकते हैं। शहीद आत्मविश्वासी होता है। उसे अपने रचनाकार प्रभु और उसके शब्द का पूरा ज्ञान होता है। उसकी पवित्रता की महक वातावरण को सुगंधित करती है। वह इच्छा-मुक्त होता है और रज़ा में लीन रहता है। वह शहादत के समय शक्ति के होते हुए भी शक्ति का दिखावा नहीं करता और कठिन से कठिन परीक्षा के समय में भी हुक्मानुसार शांत एवं अचल रहता है तथा सहजावस्था में विचरण करता हुआ सफल और संपूर्ण होता है। ऐसे जांबाज लोग शारीरिक रूप में तो दुनिया से अन्य लोगों की तरह ही चले जाते हैं, परन्तु उनकी दास्तान अन्य की तरह समय के साथ आलोप नहीं होती, बल्कि हमेशा के लिए अमर हो जाती है। इस प्रकार 'शहीद' वो होता है जो अपने विश्वास के लिए सबसे बड़ी कुर्बानी देकर सत्य का गवाह बन जाता है।[१]

'गुरु ग्रंथ विश्व कोश' के अनुसार, 'शहीद' अरबी का शब्द है और कुरान में इसका प्रयोग 'गवाह' या 'साक्षी' के अर्थ में हुआ है, मगर धीरे- धीरे इसका प्रयोग कुर्बानी या बलिदान के अर्थ में भी होने लगा।[२]

ज़ालिम का जुल्म जब हद से बढ़ जाए तब धर्म, दीन, दुखी की रक्षा और सत्य की रोशनी को ज्वलति रखने के लिए डट कर मुकाबला करना तथा शरीर की परवाह न करते हुए शरीर सत्य के लिए कुर्बान कर देना यही शहीदों की हिम्मत और शूरवीरता की निशानी होती है। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं :

मरणु मुणसा सूरिआ हकु है
जो होइ मरनि परवाणो ॥[३]

पंजाब में उत्पन्न हुआ शहीदी सिद्धांत गुरु-मर्यादा के मुताबिक ऐतिहासिक वृत्तांत का स्वरूप धारण करता रहा है। इस सिद्धांत की ध्वनि तो श्री गुरु नानक देव जी की मधुर आवाज़ में से उत्पन्न हुई थी, जिसमें समूह

**गांव : चक्क पाडला, डाक : बाबा लदाना, जिला : कैथल (हरियाणा), फोन : ९७२८६-९९०५८*

मानवीय सुर सुमिल में आलाप करती थीं। पंजाब का ऐतिहासिक वृत्तांत इस प्रकार पूरे ठाठ का सुरीला नाद है। इसकी पहली झनकार लाहौर में हुई, जब सर्वसाझी गुरबाणी निर्दिष्ट हक-सच की शहादत के लिए श्री गुरु अरजन देव जी को ललकारा गया था। शहीदों का सरताज गर्म तवी पर बैठा, चिंगारियों सहित बालू शीश पर डाली गई, खौलते हुए पानी की देग में बैठा परन्तु मुखारविंद से संगीत (सिमरन) के फूलों की वर्षा होती रही।[४].

सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥
जीवत साहिबु सेविओ
अपना चलते राखिओ चीति ॥[५]

इसी वृत्तांत का दूसरा नाद सन् १६७५ में दिल्ली के चाँदनी चौक में आलापा गया था। यह नाद दुखी जनसाधारण की सुनवाई था। जनसाधारण ने तुअस्सब तले पिसते हुए विलाप किया। धर्म की चादर, श्री गुरु तेग बहादर जी ने हाथ थामा। धर्म के लिए शीश गया, मगर धैर्य कायम रहा और नाद-गूंज इस प्रकार हुई :

बांह जिन्हां दी पकड़ीऐ,
सिर दीजै बांहि न छोड़ीऐ।
गुर तेग़ बहादर बोलिआ
धर पईए धर्म न तोड़ीऐ ॥[६]

इसके पश्चात् शहीदी गाथा के इस कठिन मार्ग की बागडोर मर्द अगंमड़े श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथ में आ गई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन में शहादत और समर्पण का वह मानक पेश किया जिसके बारे में पहले कभी सोचा तक नहीं गया था। गुरु जी ने अपना पूरा परिवार ही मानवता हेतु कुर्बान कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी के पवित्र ख़ून की बूँदें, जो लाहौर के मारुस्थल में रावी नदी के किनारे गिरी थीं, सिक्खी का धीरता का पौधा उसी की उपज है। ''पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस॥''[७] सिक्खी में दाख़िल होने के लिए पहला कदम बन गया। सैकड़ों नहीं, लाखों जन कूद कर सिक्खी के दायरे में दाख़िल होते रहे।

तीसरा नाद जनसाधारण ने अपने में से संत शहीद उत्पन्न कर खुद बजाया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के समय उनके बाद कितने ही योद्धा अपने शौर्य की गाथा के कारण इस शहीदी-गाथा का शृंगार बनते गए और इसकी सदा सद्प्रज्वलित रहने वाली लाट को और प्रचंड करते रहे। नवजन्मे बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक ने कौम के इस साझे सरमाये में अपना कीमती योगदान दिया और इसे इतना अमीर कर दिया कि युगों-युगों तक इसके चर्चे होते रहेंगे। लोगों ने अपने भाईचारे में से सर्वसाझे उत्थान के लिए शहीदों के वृत्तांत को अपनी दो समय की अरदास का अंग बना लिया। उन्हें सदा के लिए अपनी स्मृति में बसाया और संकट के

समय उनसे प्रेरणा ली। यह १८वीं और १९वीं सदी का इतिहास है :

''जिन्हां सिंघां सिघनिआं ने धर्म हेत सीस दित्ते, बंद-बंद कटवाए, खोपरियाँ लुहाइआं, चरखड़ियाँ ते चढ़े, आरिआं नाल चिराए गए. . .!''

जब सिंघों के सिर की कीमत लगी हुई थी और नगाड़े की चोट से इस कीमत का एलान हो गया था, तब भी सिंघ जंगलों में गाते हुए घूमते थे– ''सिर जावे तां जावे, मेरा सिक्खी सिदक न जावे।'' ऐतिहासिक तौर पर केश तब और भी ज्यादा आस्था का चिह्न बन कर सामने आए थे, क्योंकि इससे पहले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसा की साजना के समय केशों के अपमान को वज्र कुरहित एलान किया था, इसलिए केशों की सिक्खी स्वरूप में बहुत महत्ता और महानता बन गई। यह केवल सिक्ख की निजी हस्ती का ही चिह्न नहीं थे, बल्कि उसकी आज़ाद कौमी हस्ती का भी चिह्न बन गए थे। इसी लिए सिक्ख, सरकार की आँखों में चुभते थे। यदि कोई वस्तु किसी कौम के आत्मसम्मान, उसकी हस्ती और उसकी आस्था का सामूहिक चिह्न बन जाये तो वह वस्तु कौम के लोगों के लिए जान से अधिक प्यारी हो जानी स्वाभाविक है। यही कारण था कि सिक्ख अपनी जान दे देते थे, मगर केशों का अपमान नहीं करते थे। केशों से हीन होना उनकी नज़र में बेगैरत, ग़ुलाम और आस्थाविहीन होने के समान था। इसी कारण वे अपने केशों को प्राणों से अधिक प्यार करते थे।[८]

ऐसे ही एक आस्थावान सिक्ख भाई तारू सिंघ जी थे। भाई तारू सिंघ जी १८वीं सदी के इतिहास के शहीदों में से एक महान सिक्ख शहीद थे, जिन्होंने खोपड़ी उतरवा ली, मगर केश कत्ल नहीं करवाए और न ही धर्म-परिवर्तन किया। भाई तारू सिंघ जी सतिगुरु के अनन्य सिक्ख थे। जब मुग़ल हुकूमत भारत में आई तो इसने यहाँ के लोगों को मुसलमान बनाने के लिए हर प्रकार के साधन प्रयोग किए। ज़ालिम हुकूमत ने दूसरे धर्म वालों पर बहुत ज़ुल्म किए। भाई तारू सिंघ जी भी मुग़ल हुकूमत की जबरन धर्म-परिवर्तन वाली नीति का शिकार हो गए।

भाई तारू सिंघ जी का जन्म १७२० ई. में गाँव पूहला, ज़िला तरनतारन में हुआ। इनके पिता भाई जोध सिंघ मुगलों के साथ टक्कर लेते हुए शहादत प्राप्त कर गए थे। भाई जोध सिंघ की पत्नी अपने पुत्र भाई तारू सिंघ जी और एक विधवा बेटी बीबी तारो के साथ गाँव में रहती थी।[९] भाई तारू सिंघ जी की माता अपने माँ-बाप के घर से गुरबाणी की रहमत लेकर आई थी, इसलिए अपने बच्चों को लोरी भी उन्होंने गुरु की बाणी की ही दी।

१७२६ ई. में ज़करिया ख़ान पंजाब का सूबेदार नियुक्त हुआ। वह सिक्खों का कट्टर विरोधी था। पंजाब का सूबेदार बनते ही उसने सिक्खों का खुरा-खोज मिटाने की ठान ली। इतिहासकार डॉ. हरिराम गुप्ता के अनुसार ज़करिया ख़ान ने एलान किया कि किसी सिक्ख के केश काट कर लाने वाले को लिहाफ़-तलायी और कंबल, किसी सिक्ख के बाबत ख़बर देने वाले को दस रुपए और अगर कोई किसी सिक्ख को जिंदा पकड़ कर या मार कर लायेगा, उसे पचास रुपए इनाम दिया जायेगा। सिक्खों के घर को लूटने की सरकार की तरफ से पूर्ण रूप से धूट थी। सिक्खों को पनाह देने वाले के लिए मौत की सज़ा थी। सिक्खों को दबाने के लिए जगह-जगह पर फ़ौज तैनात की गई थी। ज़करिया ख़ान ने सिक्खों का खुरा-खोज मिटाने के लिए पूरे इलाके में अपने भरोसेयोग्य मुखबिरों का जाल बिछा दिया।[१०] इन मुखबिरों में से कृतघ्न हरिभगत निरंजनिया था, जिसके पूर्वजों की सुरक्षा नवम पातशाह जी ने की थी।

भाई तारू सिंघ जी कृषि-कार्य कर परिवार का गुज़ारा करते थे। सिक्ख उन दिनों जंगलों में चले गए थे। वे जंगलों में ही जत्थेबंद होकर तैयारी करते और जब भी मौका मिलता तो हुकूमत के साथ टक्कर लेते। भाई तारू सिंघ जी लंगर तैयार कर जंगलों में टिके सिंघों को भिजवाते और ज़रूरत के अनुसार वस्त्र आदि का प्रबंध भी करते। लोग भाई तारू सिंघ जी का बहुत आदर करते थे। किसी के भी मन में उनके प्रति किसी किस्म का संदेह नहीं था। जब हरिभगत निरंजनिए को इस बात का पता चला तो उसने ज़करिया ख़ान के पास जाकर मुखबरी की कि पूहला गाँव का भाई तारू सिंघ जंगलों में टिके सिक्खों की मदद करता है और वह भाई महिताब सिंघ मीरांकोटीए का मित्र है। भाई रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं :

हरि भगत निरंजनीए यौ फिर कही।
पूल्हे पिंड इक माझे अही।
तारू सिंघ तहिं खेती करै।
साथ पिंड वहि हाला भरै।
देह हाकम कछु थोड़ा खावै।
बचै सिंघन के पास पुचावै।[११]

इस प्रकार हरिभगत निरंजनीए ने भाई तारू सिंघ जी के बारे में ज़करिया ख़ान को और भी कई प्रकार की चुगली की। ज़करिया ख़ान ने मोमिन ख़ान की कमांड में २० सिपाहियों को भाई तारू सिंघ जी को गिरफ़्तार कर लाने के लिए भेजा। जब इस बात का पता गाँव वालों को चला, तो उन्होंने योजना बनाई कि पुलिस पर हमला कर उन्हें मार दें। इस प्रकार हम धर्म कमा लेंगे। वे इकट्ठा होकर भाई तारू सिंघ जी के पास आए। भाई तारू सिंघ जी ने गाँव वालों से कहा कि "ऐसा मत करना! हम

मौत से नहीं डरते! हमें गुरुओं का उपदेश है धर्म की ख़ातिर कुर्बान होने का। जब हमने कोई गुनाह ही नहीं किया तो भय किस बात का! सिक्ख किसी से डरता नहीं और न ही किसी को डराता है।''[१२] सिपाहियों ने भाई तारू सिंघ जी और उनकी बहन को गिरफ़्तार कर लिया। गाँव वासियों ने शाही सेना को मोटी रकम देकर भाई साहिब की बहन को छुड़वा लिया। ज़करिया ख़ान के हुक्म से भाई साहिब को गिरफ़्तार कर लाहौर लाया गया। भाई साहिब जी को जेल में बंद कर दिया गया और कई प्रकार से असह्य कष्ट दिए। जैसे-जैसे उन्हें कष्ट दिए गए, वैसे-वैसे वे और भी धैर्यवान होते गए।[१३]

भाई तारू सिंघ जी पर बागियों को शरण देने और उन्हें आवश्यक वस्तुएं प्रदान करने के दोष लगे। जब भाई तारू सिंघ जी को ज़करिया ख़ान की कचहरी में पेश किया गया तो भाई साहिब ने बेधड़क होकर नवाब को कह दिया कि ''हम ज़मीन का मालिया और व्यापार का कर भरते हैं। बाकी जो नफ़ा हमें होता है या जो दाना-खाना बचता रहता है, हम अपने तन को भूखा रख कर दूसरों (ज़रूरतमंदों) की भूख दूर करते हैं। यह कोई गुनाह नहीं है।''[१४] भाई साहिब की सच्ची व खरी बातें सुन कर ज़करिया ख़ान भड़क उठा। उसने अन्य कोई जवाब देने की बजाय एक ही उत्तर दिया, जो उस जैसे कट्टर मुग़ल हाकिम पहले भी अनेक सिंघों को दे चुके थे कि ''हमारा दीन मान लो! हम तुम्हें जागीर और एक जवान स्त्री भी देंगे।''[१५] भाई तारू सिंघ जी ने कहा, ''अगर मुसलमान बनने से मृत्यु नहीं आती हो तो अच्छा है कि मुहम्मदी बन जाएं! यदि दुख-सुख और मृत्यु से फिर भी छुटकारा नहीं होना हैं, तो क्यों बेईमान बने?'' हाकिम भाई तारू सिंघ जी को हर हाल में दीन-ए-मुहम्मदी में लाना चाहता था, ताकि सिक्खों की आस्था को कमज़ोर किया जा सके और इस बात का प्रचार कर अन्य सिक्खों पर भी धर्म-परिवर्तन करने के लिए दबाव डाला जा सके।[१६]

भाई तारू सिंघ जी ने सिक्खी में अटल विश्वास रखते हुए अकाल पुरख वाहिगुरु जी का ध्यान धर कर सिक्खी केशों-श्वासों संग निभ जाने की अरदास की।[१७] इसके बारे में जब ज़करिया ख़ान को पता चला तो उसने अहंकार में आकर सिक्खी की निशानी 'गुरु की मोहर-कोश' कत्ल करने का सुझाव काज़ी को दिया। काज़ी की तरफ से दरबार में फ़तवा जारी किया गया और भाई साहिब के केश कत्ल करने के लिए नाइयों को बुलाया गया। भाई साहिब का धैर्य देख कर नवाब फिर भड़क उठा और कड़क कर बोला, ''जिन केशों की गठरी को तुमने सिक्खी मान रखा है,

इन्हें तो मैं अभी तहस-नहस सकता हूं।'' भाई साहिब ने कहा, ''मेरे केश मेरे सिर के साथ जाएंगे।'' फिर तो भाई साहिब के हाथ-पैर बाँध कर पहले निकास (नख़ास) चौक में बिठा दिया गया। फिर नाई को कैंची-उस्तरे के साथ केश काटने का हुक्म दिया। जब एक केश भी न काटा गया, तो मोची को बुला कर खुरपी के साथ खोपड़ी उतारने लगे।[१८]

ज़करिया ख़ान ने क्रोध में आकर मोचियों को हुक्म दिया कि भाई तारू सिंघ जी के केश इस प्रकार उतारे जाएँ कि दोबारा न आ सकें। अत: भाई साहिब के केश सहित खोपड़ी उतार देने का हुक्म हुआ।[१९] ज़ालिमों ने भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी खुरपी के साथ उतार कर सिर से अलग कर दी, परन्तु भाई साहिब ने मुख से उफ तक न की।[२०] भाई केसर सिंघ छिब्बर ने भाई तारू सिंघ जी की शहादत का वर्णन इस प्रकार किया है :

इक सिक्ख तारू सिंघ माझे दा
पकड़िआ आया लाहौर।
सिरों उतारी खलड़ी समेत केसां अखोड़।
सिक्ख हेठ बैठा बद्धा जपु पढ़दा रहिआ।
सिर उपरों खलड़ी
समेत केस लुहा लइआ।[२१]

नख़ास चौक में जहाँ यह साका हुआ, वो स्थान आजकल लाहौर रेलवे स्टेशन के बिलकुल सामने है। इसी स्थान पर 'शहीद गंज सिघणिआं' बना हुआ है। इस स्थान को लंडा बाज़ार भी कहा जाता है। भाई साहिब की खोपड़ी उतारने के बाद उन्हें साथ लगती खाई में फेंक दिया गया।[२२] सिंघ वहाँ पड़ा गुरबाणी पढ़ता रहा। तीसरे दिन नवाब वहाँ से गुज़रा तो बाणी की आवाज़ सुन कर बोला, ''ओए सिक्ख! तू अभी मरा नहीं?'' सिंघ ने उत्तर दिया, ''तुझे और तेरे पुत्र को साथ ले जाऊंगा, इसलिए नहीं मरा।'' आठ दिन बाद नवाब का पुत्र अहिया खान शिकार खेलने गया तो घोड़े पर से गिर गया। पैर रकाब में फंस जाने से घसीटता चला गया और मर गया। पंद्रह दिन बाद नवाब को मूत्र-रोध हो गया। बड़े-बड़े हकीम, वैद्य, मौलवी आदि बुलाए गए, परन्तु कोई पेश न गई।[२३] फिर उसने सरदार सुबेग सिंघ का सहारा लिया। सरदार सुबेग सिंघ भाई तारू सिंघ जी के पास गए और वचन वापस लेने के लिए कहा। भाई तारू सिंघ जी ने कहा कि अब ज़करिया ख़ान की मदद साधसंगत ही कर सकती है। फिर ख़ालसे ने निर्णय किया कि यदि भाई तारू सिंघ जी की जूती नवाब के सिर पर मारी जाए, तो मूत्र-विसर्जन हो सकता है। भाई सुबेग सिंघ, भाई तारू सिंघ जी की जूती ले आये। जैसे-जैसे जूती सिर पर मारी गई वैसे-वैसे मूत्र-विसर्जन होना आरंभ हो गया। इस प्रकार नवाब जूतियों की मार खाता-खाता अंत में मर गया।[२४]

भाई साहिब की खोपड़ी उतारे जाने के बाद भी वे २२ दिन तक ज़िंदा रहे और बाणी का पाठ करते रहे। इन दिनों लाहौर का एक बढ़ई प्रतिदिन आकर हल्दी आदि का लेप बना कर भाई साहिब के सिर पर बाँधता रहा। आखिर भाई तारू सिंघ जी २५ वर्ष की आयु में १ जुलाई, सन् १७४५ ई. को शहादत प्राप्त कर गए।[२५] इस साके का वर्णन करते हुए भाई रतन सिंघ (भंगू) ने लिखा है :

ठारां सै ऊपर दुइ साल।
साका कीयो तारू सिंघ नाल।[२६]

इस प्रकार भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतार कर उन्हें शहीद कर दिया गया। भाई तारू सिंघ जी ने सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई। इस दर्दनाक साके ने सिक्खी-आस्था का सम्बन्ध केशों के साथ और भी पक्की तरह से जोड़ दिया। केश हमारी आस्था का, हमारे धैर्य का, हमारी मान-मर्यादा का प्रतीक बन गए। खोपड़ी उतरवाने वाले इस धैर्यवान सिक्ख की दर्दनाक याद पंथ ने सदा संभाल कर अपनी अरदास में जोड़ ली। १८वीं सदी के महान गुरसिक्ख भाई तारू सिंघ जी ने विश्व भर में शहादत की अलग और अनोखी मिसाल कायम करते हुए सिक्खी का जो परचम लहराया, वह रहती दुनिया तक झूलता रहेगा।

सिक्खी के जिस पौधे को मुग़ल उखाड़ न सके, अब्दाली गिरा न सका, दुर्रानी जिसकी छाया को खत्म न कर सका, वो पौधा शबद-गुरु की उर्वरा में दिन-ब-दिन बढ़ता ही गया, फलता-फूलता ही गया और फैलता ही गया। आज इस पौधे के अंकुर हम हैं, हमारे बच्चे हैं। बड़ी लज्जित बात है कि आज हमने इस पौधे की बनावट को ही बदल दिया है। आज समय की यह पुरज़ोर माँग है कि हम अवगत होकर सिक्खी की अनमोल वस्तु 'केशों' के महत्व के बारे में जानें, ताकि सिक्खी की इस अनमोल रहमत को उसके मूल रूप में ही संभाल कर रखा जा सके। जिस सिक्खी स्वरूप के लिए कौम के सिंघ-सिघणियों ने शहादत दी है, उस सिक्खी को कायम रखना ही उन शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धाँजलि होगी। पहले हम खुद सिक्खी स्वरूप वाले बनें, फिर सिक्खी स्वरूप वाले नौजवान तैयार करें, जिनकी बाबत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का फरमान है :

इन पुतरन के सीस पर वार दीए सुत चार।
चार मूए तो किआ हूआ जीवत कई हज़ार।

संदर्भ-सूची :

१. डॉ. जोध सिंघ (मुख्य संपादक), सिक्ख धर्म विश्वकोश, भाग प्रथम, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २०१३, पृष्ठ ५९३
२. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), गुरु ग्रंथ विश्वकोश, भाग प्रथम, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २००२ पृष्ठ १३०
३. शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००२, पृष्ठ ५७९
४. लाल सिंघ एम. ए., नरैण सिंघ एम. ए. श्री ननकाणा साहिब का शहीदी साका, गुरु नानक देव मिशन, पटियाला,

१९८१, पृष्ठ ५
५. शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००२, पृष्ठ १०००
६. डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों) (संपादक), रतन सिंघ (भंगू) कृत श्री गुरू पंथ प्रकाश, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, २००४, पृष्ठ २८
७. शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००२, पृष्ठ ११०२
८. जसवंत सिंघ नेकी, अरदास– दर्शन, रूप अभ्यास, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, २००५, पृष्ठ १४३– १४४
९. सिमरजीत सिंघ, शहीद भाई तारू सिंघ जी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २०२०, पृष्ठ ३४
१०. उपरोक्त।
११. भाई वीर सिंघ (संपादक), रतन सिंघ (भंगू) कृत प्राचीन पंथ प्रकाश, भाई वीर सिंघ साहित्य सदन, नई दिल्ली, २००८, पृष्ठ २१४
१२. भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००२, पृष्ठ १४२६
१३. जिम जिम सिंघ को तुरक सतावैं।
तिम तिम मुख सिंघ लाली आवै।
डॉ. जीत सिंघ सीतल (संपादक), भाई रतन सिंघ (भंगू) कृत श्री गुर पंथ प्रकाश, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी श्री अमृतसर, २००५, पृष्ठ ३६७
१४. तुम को दे के जो रहि जाइ।
सो हम अपने पेटन पाइं।
अपनो तन पेट रख कै ऊणी।
देत और को चबण चबूणी।
उपरोक्त, पृष्ठ ३६९–७०
१५. फिर नवाब ने लोभ दिखायो।
कहयो जगीर लेहु मन भायो ॥
बेटी मुग़ल पठानन केरी।
लेहु तुरक बनि अबि बिन देरी ॥
ज्ञानी किरपाल सिंघ (संपादक), ज्ञानी गिआन सिंघ कृत श्री गुरू पंथ प्रकाश, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, १९७०, पृष्ठ २२६१
१६. सिमरजीत सिंघ, शहीद भाई तारू सिंघ जी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २०२०, पृष्ठ ११
१७. सिख ने गुर का करयो धिआन।
हे गुर केस सीस संग जान।
ज्ञानी गिआन सिंघ, पंथ प्रकाश, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९७०, पृष्ठ ७५३
१८. ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग दूसरा, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, २००३, पृष्ठ १४२
१९. तब नवाब बहु क्रोधिहि भरा।
सोऊ हुकम उन मोचिअन करा।
इस की खोपरी साथे बाल।
काट उतारो रंबी नाल।
भाई वीर सिंघ (संपादक), रतन सिंघ (भंगू) कृत प्राचीन पंथ प्रकाश, भाई वीर सिंघ साहित्य सदन, नई दिल्ली, २००८, पृष्ठ २३१
२०. कटिओ अरध सिर खाल लहाई।
सिंघ ने मुहों सी न कड़ाई।
ज्ञानी गिआन सिंघ, पंथ प्रकाश, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९७०, पृष्ठ ७५४
२१. प्रो. पिआरा सिंघ पद्म (संपादक), भाई केसर सिंघ छिब्बर कृत बंसावलीनामा दसां पातशाहियां का, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, २००५, पृष्ठ २२४
२२. सिमरजीत सिंघ, शहीद भाई तारू सिंघ जी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २०२०, पृष्ठ १३
२३. गुरुद्वारा गज़ट, जुलाई २०१८, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, पृष्ठ १५
२४. ठारां सै दुइ साल पर बीते बिकरमाइ।
तारू सिंघ तब लै तुरयो जूत जु तिह सिर लाइ।
डॉ. जीत सिंघ सीतल (संपादक), भाई रतन सिंघ (भंगू) कृत श्री गुर पंथ प्रकाश, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, २००५, पृष्ठ ३८३
२५. सिमरजीत सिंघ, शहीद भाई तारू सिंघ जी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २०२०, पृष्ठ १३
२६. भाई वीर सिंघ (संपादक), रतन सिंघ (भंगू) कृत प्राचीन पंथ प्रकाश, भाई वीर सिंघ साहित्य सदन, नई दिल्ली, २००८, पृष्ठ २३२

सेवक कउ निकटी होइ दिखावै

-डॉ. परमजीत कौर*

परमात्मा सर्वव्यापक है :

तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई
साचा सिरजणहारु जीउ ॥ (पन्ना ४३८)

हमारा परमात्मा के साथ अति निकट का सम्बन्ध है। हमारी नित्य की क्रियायें इस सम्बन्ध को प्रकट करती हैं। जो प्रभु हमको देता है वही हम प्राप्त करते हैं। हमारे शरीर की शक्ति अर्थात् हाथ, पैर, कान, नेत्र आदि की ताकत प्रभु की कृपा से ही है। हमारी कोई भी क्रिया पारब्रह्म प्रभु के हुक्म से बाहर नहीं है। कृपालु दातार प्रभु सदा जीवों की सार-संभाल करता है, सदा उनकी प्रार्थना सुनता है :

— *जह जह मन तूं धावदा*
तह तह हरि तेरै नाले ॥ (पन्ना ४४०)

— *नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले ॥*
जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥
(पन्ना ४८९)

— *सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभु नेरहू ते नेरे ॥*
(पन्ना ५४७)

जीव अपने कर्मों के फलस्वरूप अकाल पुरख के समीप या दूर होता जाता है। वह अपने मन की अवस्था के अनुसार प्रभु के *अस्तित्व को* समझता है, पहचानता है। सेवक-भावना से प्रभु की आराधना करने वाला प्रभु-प्रेम में रंगा हुआ मनुष्य (गुरमुख) परमात्मा को सदा अंग-संग देखता है, जबकि मनमुख को सदा दूर ही प्रतीत होता है :

दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर
सरब घटा भरपूरी रे ॥
पेखत सुनत सदा है संगे
मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥ (पन्ना ६१२)

जिस मनुष्य की परमात्मा के साथ सच्ची प्रीति बन जाती है, जो आत्मिक स्थिरता में टिक कर सदा नाम-सिमरन करता है, सुख-दुख, मान-अपमान में जिसके मन की अवस्था एक समान रहती है, सुख में ज्यादा खुश नहीं होता, दुख में घबराता नहीं, अहंकार में नहीं आता , मानव-जन्म के उद्देश्य के बारे में विचार करता है, मृत्यु के सत्य को स्वीकार कर लेता है। लोभ आदि विकार जिसे पाप के गलत मार्ग पर नहीं ले जाते, सदा प्रभु की रजा में राजी रहता है, वह प्रभु का सच्चा सेवक, सच्चा भक्त बन जाता है। गुरु-वाक्य है :

— *सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥*
(पन्ना ५२७)

— *चाकरु त तेरा सोइ होवै*
जोइ सहजि समावए ॥
दुसमनु त दूखु न लगै

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)—१३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६

मूले पापु नेड़ि न आवए ॥
हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥
(पन्ना ५६७)
— वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥ (पन्ना ८४)
— मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥
(पन्ना ५१)

सच्चा सेवक अकाल पुरख के साथ एक-रूप हो जाता है। उसका अहं समाप्त हो जाता है। परमात्मा से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं, यह बात वह समझ जाता है :

नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

परमात्मा अपने सच्चे सेवकों के साथ सदा अंग-संग रहता है। उसके सेवक सदा प्रफुल्लित रहते हैं। उनको कोई दुख दुखी नहीं करता है। उन पर प्रभु की कृपा-दृष्टि सदा बनी रहती है। श्री गुरु अरजन देव जी स्पष्ट करते हुए समझाते हैं कि परमात्मा अपने सेवकों का सदा निकटवर्ती साथी बनकर रहता है। सेवक जो कुछ परमात्मा से मांगता है, उसकी वही इच्छा पूरी हो जाती है। प्रभु अपने सेवक की लाज स्वयं रखता है। सेवक के कार्य पूर्ण करने के लिए परमात्मा स्वयं आ पहुंचता है :

अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥
जह जह काज किरति सेवक की
तहा तहा उठि धावै ॥१ ॥
सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥
जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु
ततकाल होइ आवै ॥ (पन्ना ४०३)

जैसे माता-पिता बच्चों की सुरक्षा करते हैं उनका पालन-पोषण करते हैं, वैसे ही सबकी पालना करने वाला दाता प्रभु अपने सेवकों का सदा रक्षक बना रहता है, उनको सदा अपना बनाये रखता है :

अपने दास का सदा रखवाला ॥
करि किरपा अपुने करि राखे
मात पिता जिउ पाला ॥ (पन्ना ६२३)
— आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै
आपणिआ भगता की पैरी पावै ।।
धरम राइ है हरि का कीआ
हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥
जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा
होर केती झखि झखि आवै जावै ॥
(पन्ना ५५५)

मगर जिन जीवों में विनम्रता का अभाव होता है, जो अपनी तरफ से चतुराई करते हैं, अपनी बुद्धि का घमंड करते हैं, 'यह मेरा है', 'यह मैंने किया है' आदि सोचते हुए जो परमात्मा से अलग अस्तित्व के भ्रम में पड़े रहते हैं, अपने आप को कर्ता समझते हैं, प्रभु की रज़ा को नहीं मानते, उनको परमात्मा निकट होते हुये भी दूर प्रतीत होता है। परमात्मा जीव के अंदर ही हृदय-घर में बसता है, लेकिन बीच में अहं (हउमै) की दीवार आ जाती है :

— सभना का सहु एकु है सद ही रहै हजूरि ॥
नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदिर दूरि ॥
(पन्ना ५१०)
— हउ हउ भीति भइओ है बीचो
सुनत देसि निकटाइओ ॥

भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥
(पन्ना ६२४)
— मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥
घटि घटि ब्रहमु पसारिआ
भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ (पन्ना ६४०)

जब तक मन में परमात्मा पर पूर्ण विश्वास नहीं, सच्चा प्रेम नहीं, किसी अन्य सहारे का भ्रम है, तब तक प्रभु के सामीप्य को महसूस नहीं किया जा सकता :

— जिचरु दूजा भरमु सा अंमाली
तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ (पन्ना ५६४)

प्रभु के सामीप्य को प्राप्त करने के लिए अन्दर से काम, क्रोध, लोभ, झूठ, निंदा, अहंकार आदि का जहर निकालना बहुत जरूरी है। यही नहीं, अपनी बुद्धिमता, चतुराई का गर्व भी छोडना पड़ता है, स्वत्व का त्याग भी करना पड़ता है :

— मानु न कीजै सरणि परीजै
करै सु भला मनाईऐ ।।
सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै
इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥ (पन्ना ६१२)
— काम क्रोध लोभ झूठ निंदा
इन ते आपि छडावहु ॥
इह भीतर ते इन कउ डारहु
आपन निकटि बुलावहु ॥
(पन्ना ६१७)

अपने आत्मिक जीवन की जांच-पड़ताल करनी पडती है :

— गुरमती आपै आपु पछाणै
ता निज घरि वासा पावै ॥ (पन्ना ५६५)

गुरु का आश्रय लेकर मनुष्य प्रभु के सामीप्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है :

देखहु अचरजु भइआ ॥
जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि
बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ (पन्ना ६१२)

काम, क्रोध, अहंकार आदि जीव को शुभ गुणों का धारक नहीं बनने देते । वह गलत जीवन- मार्ग पर चल पड़ता है। उसका मन सदैव रसों में लिप्त रहता है। रसों में लिप्त मनुष्य को प्रभु हृदय-घर में बसता दिखाई नहीं देता। गुरु के शबद में जुड़ने से, गुरमति के अनुसार जीवन बनाने से मनुष्य विकारों के जाल से मुक्त होने का यत्न करता है। नाम-रस का आनन्द आने लग जाता है।'मैं' का अभाव हो जाता है, विनम्रता आ जाती है। अलगाव की भावना समाप्त हो जाती है। क्रोध विवेकहीन नहीं करता। लोभ पाप के रास्ते पर नहीं ले जाता। मन सन्तुष्ट रहने लगता है। स्वत्व त्याग कर प्रभु के नाम-सिमरन में लग जाता है तथा प्रभु के सामीप्य को अनुभव करने लगता है :

— हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥
सबदि मरै ता जाति जाइ
जोती जोति मिलै भगवानु ॥ (पन्ना ४२९)
— साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥
(पन्ना ५०९)
— सेवक सेव करहि सभि तेरी
जिन सबदै सादु आइआ ॥
गुर किरपा ते निरमलु होआ
जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥. . .
— जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ

सबदे हउमै मारी ॥ (पन्ना ५९९)

प्रभु के सेवक को दुख-सुख, बुरा-भला, लाभ-हानि एक जैसे प्रतीत होने लगें, तो वह सिमरन का फल प्राप्त कर सकता है :

घघै घाल सेवकु जे घालै
सबदि गुरू कै लागि रहै ॥
बुरा भला जे सम करि जाणै
इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥ (पन्ना ४३२)

प्रभु का सामीप्य प्राप्त करने के लिए प्रभु की कृपा-दृष्टि आवश्यक है। जिस जीव पर प्रभु दयालु हो जाये, उससे वही कार्य करवाता है, जो उसे अच्छा लगता है। उसी सेवक को परमात्मा अपनी रज़ा में चलने का बल प्रदान करता है। प्रभु की रज़ा में प्रसन्न रहने वाला ही प्रभु-दर पर कबूल होता है, प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है। गुरु-फरमान है :

— जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥
जिसु क्रिपा करहि बसहि तिसु नेरा ॥
(पन्ना ७४३)

— साहिबु होइ दइआलु
किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥
सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥
हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु
ता खसमै का महलु पाइसी ॥
खसमै भावै सो करे
मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥
ता दरगह पैधा जाइसी ॥ (पन्ना ४७१)

श्री गुरु अरजन देव जी समझा रहे हैं कि दिन-रात, सायं-काल, प्रात:काल हर समय प्रभु के गुण गाते रहो, परमात्मा के नाम का सिमरन करते रहो, परमात्मा सदा साथ रहता है। परमात्मा के पास ही प्रार्थना करनी चाहिए। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों पदार्थ, आनन्द-खुशियों के खजाने, आत्मिक स्थिरता के सुख, जैसी प्रत्येक वस्तु परमात्मा से मिल जाती है।

परमात्मा का आश्रय लेने से विकारों की अग्नि दुखी नहीं करती । परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट न करने वालों के भी करोड़ों पाप परमात्मा बार-बार क्षमा कर देता है। परमात्मा दयालु है। उसकी ही शरण लेनी चाहिए :

— सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥
सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद
दिनु रैनि साझ सवेरै ॥ (पन्ना ५३०)

— अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥
चारि पदारथ अनद मंगल निधि
सूख सहज सिधि लहीऐ ॥१ ॥रहाउ ॥
मानु तिआगि हरि चरनी लागउ
तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥
आंचन लागै अगनि सागर ते
सरनि सुआमी की अहीऐ ॥
कोटि पराध महा अक्रितघन
बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥
करुणा मै पूरन परमेसुर
नानक तिसु सरनहीऐ ॥
(पन्ना ५३१)

. . . नानक निरमल पंथु चलाइआ

*—डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु नानक साहिब का संसार में आगमन एक निश्चित उद्देश्य से हुआ था। इसे विद्वानों ने अपनी-अपनी दृष्टि से विश्लेषित और परिभाषित किया है। सामान्यत: इसे तात्कालिक परिस्थितियों के संदर्भ में देखा गया है। श्री गुरु नानक साहिब ने स्वयं अपनी बाणी में उन परिस्थितियों का उल्लेख किया जो उनके समय संसार में विद्यमान थीं। गुरु साहिब ने कहा कि कलियुग की छुरी समाज की शक्तिशाली सत्ता के हाथ में आ गई है, जिससे अन्याय का साम्राज्य स्थापित हो गया है। धर्म का क्षरण हो गया है। धर्म विस्मृत हो गया है। झूठ रात के घने काले अंधेरे की तरह पसर गया है। सच का चंद्रमा अदृश्य हो गया है, जिससे राह दिखनी बंद हो गई है। श्री गुरु नानक साहिब के उद्देश्य को प्रकट करते हुए श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि कलियुग में भक्ति का उद्देश्य सच के चंद्रमा को पुन: उदित कर सम्पूर्ण संसार को प्रकाशित कर देना है, ताकि मार्ग प्रकाशित हो सके– ''कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥'' श्री गुरु नानक साहिब ने भक्ति की शक्ति से धर्म को प्रकाशित किया। श्री गुरु नानक साहिब ने मात्र सच की बात की। उन्होंने उस सच की बात की जो शाश्वत है :

आदि सचु जुगादि सचु ।।
है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।

(पन्ना १)

सच संसार में आरंभ काल से ही व्याप्त है। सच आज भी और अनंत काल तक अर्थात् सर्वदा रहने वाला है। यह सच ही सृष्टि का आधार है और जीवन का सार है। सच है तो सृष्टि सार्थक है और जीवन उद्देश्यपूर्ण है। श्री गुरु नानक साहिब ने सच के अस्तित्व का सदैव रहना स्वीकार किया। इस दृष्टि से सृष्टि और जीवन का सदैव सार्थक होना स्थापित होता है। सच को उन्होंने परमात्मा के रूप में चिन्हित किया और उसका पहला लक्षण उसका निर्गुण और काल से परे होना बताया:

जुगु जुगु साचा है भी होसी ।।
कउणु न मूआ कउणु न मरसी ।।
नानकु नीचु कहै बेनंती
दरि देखहु लिव लाई हे ॥ (पन्ना १०२२)

सच स्वरूप परमात्मा के दर्शन करने के लिए मन की आंखें चाहिये। अंतर्ध्यान होकर ही वह मिलता है। उसका यह निर्गुण स्वरूप अविनाशी है। उसके अतिरिक्त संसार में जो भी दृष्टव्य है,

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

सभी कुछ नाशवान है। श्री गुरु नानक साहिब ने अपनी बाणी में भले ही चार युगों– सतियुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का उल्लेख किया और वर्तमान को कलियुग कहा, किन्तु उन्होंने युगों को काल की गणना से नहीं जोड़ा। उनकी दृष्टि में युग मनुष्य के गुणों के प्रतीक थे। जब मनुष्य के मन और मुख में सच है और वह सच्चे गुरु की आज्ञा में रह कर संतोष, सहज, संयम जैसे गुणों से दृढ़ हो जाये, सच, परमात्मा स्वयं ही उसमें प्रकट हो जाता है और उसका सहायक बनता है। उसके सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। इसे श्री गुरु नानक साहिब ने 'सतियुग' कहा। उन्होंने सत्, दया, संतोष, विश्वास और निर्भयता को सतियुग के चार स्तम्भ कहा। त्रेता युग को गुरु साहिब ने दुविधा का युग कहा। इस युग अवस्था में यदि मनुष्य गुरु की शिक्षा का पालन दृढ़ता से करता है तो परमात्मा की कृपा प्राप्त करने में सफल हो जाता है अन्यथा जीवन व्यर्थ गंवा देता है। द्वापर वह अवस्था है जब मनुष्य दुविधा के साथ ही दया, सत् से भी दूर हो जाता है। यह वो अवस्था है जब मनुष्य के धर्म-कर्म में स्वार्थ निहित हो जाता है। मनुष्य अपने गुणों का सांसारिक प्रतिफल चाहता है। कलियुग अवगुणों, विकारों, माया की ओर उन्मुख हो जाने की अवस्था है, जिससे एकमात्र गुरु ही उबार सकता है। श्री गुरु नानक साहिब का पंथ ''मनमुखि कूड़ु वरतै वरतारा'' की कलियुग की अवस्था से ''सति सति वरतै गहिर गंभीरा'' की सतियुग की अवस्था तक के मार्ग को प्रकाशित करना था। यह अंतिम सिरे के काल-खंड से आदि सिरे के काल-खंड तक वापिस मुड़ने का संकल्प नहीं था, निकृष्टतम अवस्था से निकल कर सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त करने की यात्रा थी। श्री गुरु नानक साहिब ने इस यात्रा के मार्ग का अन्वेषण भी किया और उसे प्रशस्त भी किया।

श्री गुरु नानक साहिब ने अपनी बाणी जपु जी साहिब में धर्म-मार्ग के चार प्रवेश द्वारों (खंडों) का उल्लेख किया है, जिनसे होकर जाना होता है। ये द्वार अथवा खंड हैं– धरम खंड, ज्ञान खंड, सरम खंड, करम खंड। इससे अगला और अंतिम खंड, पड़ाव, आवस्था गंतव्य, लक्ष्य, मंजिल है– 'सच खंड' 'धरम' (धर्म) खंड से श्री गुरु नानक साहिब का मनोरथ था व्यवहारिक जीवन से। वास्तविक जीवन में ही परीक्षा होती है कि मनुष्य धर्म के मार्ग पर चलने के लिए कितना योग्य है तथा कितनी योग्यता और प्राप्त करनी है। एक समय था जब भक्ति के लिए लोग परिवार, समाज त्याग कर पहाड़ों पर, वनों में चले जाया करते थे और एकांतवास करते थे। गुरु साहिब ने इसे पलायन माना और कहा कि इस संसार में तो परमात्मा के रंग बिखरे हुए हैं। यहां उस सत्य स्वरूप परमात्मा का सच्चा दरबार सजा हुआ है। भक्ति यहीं करना योग्य है। इसके बाद का खंड ज्ञान प्राप्त करने का है– 'ज्ञान-खंड'। सृष्टि की

विविधता और विशालता को जानने से परमात्मा की महानता का बोध होता है। परमात्मा की महानता का ज्ञान उसके प्रति भावना और आस्था उत्पन्न करता है तथा मनुष्य उसकी कृपा पाने का प्रयास करता है। उसे सर्वत्र परमात्मा की महानता के दर्शन होने लगते हैं। उसका मन परमात्मा की प्रतीति करने लगता है। इसे गुरु साहिब ने 'सरम खंड' कहा। इससे गुजरने के बाद मनुष्य 'करम खंड' में प्रवेश करता है। इस खंड में आ जाने का अर्थ है– मनुष्य के कर्मों में श्रेष्ठता आ जाना। उसका सच और धर्म का संकल्प दृढ़ हो जाता है, विश्वास अडोल हो जाता है। उसके कर्मों में गुण प्रकट होने लगते हैं। ऐसा करते हुए उसे आनंद की अनुभूति होने लगती है। जब परमात्मा का ध्यान और भक्ति से मन परिपूर्ण हो जाये और उससे सदैव आनंद उत्पन्न होने लगे, माया का झूठा आनंद पूरी तरह से आलोप हो जाये तो समझा जाना चाहिये कि 'करम खंड' की अवस्था प्राप्त हो गई है। इस अवस्था में परिपक्व हो जाने के बाद मन 'सच खंड' में प्रवेश कर जाता है अर्थात् परमात्मा में रम जाता है। परमात्मा और उसके मध्य कोई नहीं होता है। उसके सारे कार्य परमात्मा की आज्ञा और इच्छा के अनुरूप हो जाते हैं। उसे घट–घट में परमात्मा के दर्शन होते हैं और इसे देख वह विस्मय से भर जाता है। 'धरम खंड' से चल कर 'सच खंड' तक पहुंचने के लिये ही यह मानव जीवन प्राप्त हुआ है। श्री गुरु नानक साहिब का मिशन 'सच खंड' तक पहुंचाने का था। उन्होंने बताया कि इसके लिये कैसे मन में भावना उत्पन्न करनी है और संकल्प को कैसे परिपक्व करना है। इस हेतु मार्गदर्शन के लिये ही उन्होंने बाणी उच्चारण की।

श्री गुरु नानक साहिब जब सुलतानपुर लोधी से धर्म प्रचार–यात्राओं पर निकले तो पूरी तरह से स्पष्ट थे कि उनका दर्शन क्या है और वे समाज को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं। बाईस-तेईस वर्ष की यात्राओं में उन्होंने लगभग पूरे भू-भाग का भ्रमण किया। हर स्थान पर उन्होंने सभी वर्गों से संवाद स्थापित किया, जिसका उल्लेख ऐतिहासिक स्रोतों में मिलता है। सभी जगह उनसे उनके उद्देश्य के बारे में जानने की उत्सुकता व्यक्त की गई। सिद्धों से हुए संवाद का उल्लेख श्री गुरु नानक साहिब ने अपनी बाणी में स्वयं किया है। उनकी बाणी का शीर्षक ही 'सिध गोसटि' अर्थात् 'सिद्ध गोष्ठि' है। इस बाणी के अनुसार सिद्ध श्री गुरु नानक साहिब से प्रश्न करते हैं कि उनका मार्ग क्या है :

नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥

(पन्ना ९३८)

आरंभिक संवाद में सिद्धों ने श्री गुरु नानक साहिब के बारे में जानने की उत्सुकता व्यक्त की कि क्या उन्होंने कोई नया पंथ अथवा संप्रदाय चलाया है। सामान्यत: संप्रदायों का कोई अपना विशिष्ट नाम होता था, कोई भिन्न ढंग, विधान होता था। श्री गुरु नानक साहिब ने जो उत्तर दिया

उसने सिद्धों को आवाक कर दिया:

गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥

(पन्ना ९३८)

गुरु साहिब ने कहा कि उनकी मानव समाज को यही प्रेरणा है कि वह परमात्मा की सत्ता और अधीनता को स्वीकार करे तथा अपने जीवन के सच्चे उद्देश्य को पहचान कर माया एवं विकारों से उबरे, गुण धारण कर अंतर की निर्मलता प्राप्त करे। वह सच होकर सच स्वरूप परमात्मा में मन को लीन करे। सच स्वरूप परमात्मा से मेल के लिये स्वयं सच होना पड़ता है, परमात्मा के योग्य बनना पड़ता है। श्री गुरु नानक साहिब का पंथ परमात्मा के योग्य बनने का पंथ था। श्री गुरु नानक साहिब के इस पंथ को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक सभी गुरु साहिबान ने आगे बढ़ाया और उन सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप प्रदान किया, जिनकी स्थापना श्री गुरु नानक साहिब ने की थी।

छ: गुरु साहिबान की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई पर आसीन कर सिक्ख पंथ सदा के लिये गुरु-शबद के अधीन कर दिया। गुरु-शबद के अधीन होने का अर्थ था– परमात्मा के योग्य बनने की प्रतिबद्धता। सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे शीश निवाता है, गुरबाणी पढ़ता है, गुरबाणी सुनता है और गुरबाणी की विचार करता है। गुरबाणी से जुड़ना क्या है और गुरबाणी से कैसे जुड़ना है, इसे जाने बिना गुरसिक्ख की गति नहीं है। यह शिक्षा भी कहीं बाहर से नहीं गुरबाणी से ही मिलती है। गुरबाणी सिक्ख को जीवन-व्यवहार सिखाने वाली है। उसी का जीवन सफल है, सिक्ख होना सार्थक है, जो गुरबाणी को जीवन के मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करता है और उसके अनुरूप आचरण करता है। श्री गुरु अमरदास जी ने इसे स्पष्ट किया :

तिन का जनमु सफलु है
जो चलहि सतगुर भाइ ॥
कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ ॥

(पन्ना २८)

गुरु के दिखाये मार्ग पर चलने के लिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण ही एकमात्र विकल्प है। जिसने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के उपदेशों को अपने आचरण में उतार लिया उसका ही नहीं, उसके पूरे कुल का उद्धार हो गया। गुरु साहिब ने कहा कि वह माता भी धन्य है जो ऐसे सपूत को जन्म देती है। सिक्ख होना उसका सफल है, जो गुरु के उपदेशों पर चल रहा है। माता-पिता स्वयं गुरबाणी की शिक्षाओं को अंगीकार करें और अपनी संतान को भी ऐसी ही प्रेरणा दें।

गुरु-घर में जाकर गुरसिक्ख का पहला अदब होता है– श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष अति विनम्रता के साथ हाथ जोड़ना और माथा टेकना। माथा टेकना श्री गुरु ग्रंथ साहिब को प्रसन्न करना नहीं है, जिससे मन की कामनायें

पूरी होने का वर प्राप्त हो सके। इष्ट को प्रसन्न कर सिद्धियां प्राप्त कर लेने की पुरातन कथायें अनेक मिलती हैं, किन्तु सिक्ख का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे माथा टेकना गुरबाणी के प्रति प्रेम और आभार प्रकट करना है :

जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥
गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु
पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥

(पन्ना ९६)

गुरसिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को अमृत बाणी मानता है, गुरबाणी के उपदेशों के प्रति मन में प्रेम-भावना रखता है, क्योंकि वह जानता है कि गुरबाणी से ही उसके दुख दूर होंगे और उद्धार संभव है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के ज्ञान को वह पूर्ण ज्ञान, पूर्ण निदान मानता है और इसे अपने ऊपर वाहिगुरु के उपकार के रूप में देखता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष माथा टेकने में इस भावना का ही महत्व है । श्री गुरु अरजन साहिब ने जिस उद्देश्य से श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन किया और जिस भावना से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई पर आसीन किया, समय बीतने के साथ-साथ उस उद्देश्य और भावना को भुलाया जाने लगा। सिक्ख शबद-सेवक के स्थान पर शबद-पूजक बनने लगे। इस मनोवृत्ति को तोड़ने के लिये ही पंथ द्वारा स्वीकार की गई 'सिक्ख रहित मर्यादा' (सिक्ख आचरण नियमावली) में विशेष प्रावधान करना पड़ा। निम्न प्रावधान ध्यान से विचार करने योग्य है :-

''श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पंघूड़े (मंजी साहिब, आसन) के पायों को मुट्ठियाँ भरना, दीवारों अथवा चबूतरों (आसन-स्थान) पर नाक रगड़ना या मुट्ठियाँ भरना, मंजी साहिब के नीचे पानी रखना, गुरुद्वारों में बुत (मूर्तियां) बनाना अथवा रखना, गुरु साहिबान या सिक्ख बुजुर्गों के चित्रों के सामने माथा टेकना, इस तरह के कर्म मनमत हैं।''

इसके अतिरिक्त 'सिक्ख रहित मर्यादा' में धूप, दीये जला कर आरती करने, भोग लगाने, ज्योतें जगाना, घंटे बजाने आदि का भी निषेध किया गया है। स्पष्ट है कि ऐसी मनोवृत्तियाँ उस समय सर उठाने लगी थीं और श्री गुरु नानक साहिब के निर्मल पंथ के विकृत होने का संकट पैदा होने लगा था। इसी कारण ऐसे निर्देश जोड़े गये। यह सिक्ख के मूर्ति-पूजक बन जाने से रोकने का सशक्त प्रयास था। सिक्ख को हर उस कर्म से दूर करने का प्रयास था जो उसके मन में कलियुग से सतयुग की अवस्था में जाने की यात्रा को बाधित करता हो।

गुरु साहिबान के दर्शन करने वाली संगत उनके चरणों में माथा टेकती थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई सौंप कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शीश निवाया था। वह भावनाओं का प्रकटीकरण था। आदर, प्रेम, समर्पण को प्रकट

करने का इससे श्रेष्ठ और विनम्र ढंग कोई हो ही नहीं सकता। यह भावना अक्षुण्ण रहनी चाहिये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी इसके प्रति सचेत किया है :

जागत जोति जपै निस बासुर
एकु बिना मनि नैक न आनै ॥
पूरन प्रेम प्रतीत सजै
ब्रत गोर मड़ी मठ भूल न मानै ॥

(श्री दसम ग्रंथ)

किसी कर्म को लेकर भावना का न होना उसी कर्म को कर्मकांड बना देता है। गुरसिक्ख यदि मात्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्वास रखता है तो उसका आधार भी गुरबाणी के प्रति पूर्ण प्रेम और विश्वास होना चाहिये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्वास वास्तव में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में विश्वास है। श्री गुरु रामदास जी ने वचन किया कि गुरबाणी ही गुरु है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी
विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै
परतखि गुरू निसतारे ॥ *(पन्ना ९८२)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन श्री गुरु रामदास जी के बाद हुआ किन्तु उन्होंने पूर्व में ही सांकेतिक रूप से 'बाणी' को 'गुरु' घोषित कर दिया था और गुरबाणी के उपदेशों के पालन को ही गुरु का दर्शन माना। श्री गुरु नानक साहिब ने गुरबाणी को पूर्ण गुरु कहा था : ''सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा . . . ॥''

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आदर करना, गुरबाणी को पढ़ना और सुनना उस अवस्था को प्राप्त करना है जहां परमात्मा का स्वरूप प्रत्यक्ष हो जाता है अर्थात् मन में बस जाता है। इस अवस्था को पाने में क्या बाधायें हैं, उन्हें कैसे दूर करना है, कैसे गुण धारण करने हैं, जो परमात्मा की शरण प्राप्त करने में सहायक हैं, इसका ज्ञान गुरबाणी पढ़ने, सुनने से ही होता है। यह ज्ञान पाने के लिये ही गुरबाणी पढ़ी और सुनी जाती है। आज गुरबाणी को लेकर बहुत-से भ्रम हैं। प्राय: जोर देकर बताया जाता है कि किस शबद को पढ़ने से संतान-प्राप्ति होगी या धन आयेगा आदि-आदि। यह प्रकट करता है कि गुरबाणी को आत्मिक उन्नति के स्थान पर भौतिक सफलताओं का माध्यम मान लिया गया है। यह बड़ी भूल है, सिक्ख पंथ के मूल आधार के विपरीत है। जिस जीवन को गुरु साहिबान ने एक रात का मेहमान माना और संसार में निर्लिप्त रहने की प्रेरणा दी है, उस जीवन के सांसारिक उद्देश्यों के लिये गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित बाणी का आश्रय लेने से बड़ी अज्ञानता और भ्रम अन्य क्या हो सकता है! गुरबाणी का संबंध भौतिकता और संसार से नहीं है। गुरबाणी का क्षेत्र परमात्मा और मन है।

प्रभ बेअंत गुरमति को पावहि ॥
गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥
सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु
इउ आतम रामै लीना हे ॥ *(पन्ना १०२८)*

गुरबाणी पढ़ना और सुनना तभी सार्थक है जब परमात्मा की महानता का ज्ञान हो जाये और परमात्मा के निकट जाने की प्रेरणा प्राप्त हो। गुरबाणी की राह परमात्मा को पाने, उसे मन में बसाने की राह है। उपरोक्त वचन में श्री गुरु नानक साहिब ने कई महत्वपूर्ण बातें कहीं। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा की महिमा अनंत है। उसे गुरबाणी द्वारा ही जाना जा सकता है। दूसरी बात मन की चंचलता की है। मन को वश में करना अति कठिन है। गुरबाणी ही मन पर अंकुश का कार्य करने और उसे सही दिशा देने में सक्षम है। तीसरी बात यह कि गुरबाणी पर कोई शंका न हो। गुरु के उपदेशों, शिक्षाओं को किसी दुविधा के बिना मन अंगीकार करने को तत्पर हो। इसका अंतिम लक्ष्य मन का परमात्मा के प्रेम में लीन हो जाना है। गुरसिक्ख का कर्त्तव्य है– इस लक्ष्य को सामने रख कर ही गुरबाणी पढ़े और सुने। विद्यार्थी के पढ़ने का ध्येय होता है– परीक्षा पास करना। गुरसिक्ख को गुरबाणी पढ़ कर जीवन की परीक्षा पास करनी है।

गुरु साहिबान चमत्कारों के विरुद्ध थे। कई अवसरों पर जब उन्हें चमत्कार दिखाने को कहा गया तो उन्होंने स्पष्ट इन्कार कर दिया। गुरु साहिबन ने कहा कि उनके पास परमात्मा का नाम, भक्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं है। परमात्मा की भक्ति से प्राप्त कृपा में ही सारे सुख हैं।

जिना गुरबाणी मनि भाईआ
अंम्रिति छकि छके ॥ (पन्ना ४४९)

अमृत को सबसे अनमोल माना गया है। यह सभी आकांक्षायें पूरी करने वाला, सारे सुख देने वाला और सबसे बड़े दुख–मृत्यु से भी मुक्त करने वाला है। जिसने गुरबाणी को प्यार, आदर सहित अपने जीवन का आधार बना लिया वह सदा के लिये तृप्त हो जाता है। गुरु की आज्ञा, गुरबाणी का हुक्म मानने में ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आदर, प्रेम और भक्ति है। इसका दूसरा कोई ढंग नहीं है। यदि कोई अन्य ढंग अपना रहा है तो वह कर्मकांड है, जिसका कोई लाभ नहीं। गुरबाणी को बहुत सारे लोग पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं, किन्तु ऐसा करना सार्थक उसी का है जिसका जीवन गुरु के उपदेशों के अनुसरण से बदल रहा है :

सेवक सिख पूजण सभि आवहि
सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै
जिन सतिगुर की आगिआ
सति सति करि मानी ॥ (पन्ना ६६९)

गुरबाणी को पढ़–सुन कर गुरसिक्ख अपने अंदर वह योग्यतायें विकसित करता है जो उसे परमात्मा के समक्ष स्वीकारयोग्य बनाती हैं। इस योग्यता से 'सतयुग' की अवस्था प्राप्त करना और 'सच खंड' में प्रवेश करना ही निर्मल पंथ है, सिक्ख पंथ है।

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की आठ पहरी मर्यादा

*—ज्ञानी मोहन सिंघ उरलाणा**

श्री अमृतसर साहिब में स्थित अमृत सरोवर के मध्य श्री गुरु अरजन देव जी ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब का निर्माण करवाया, जिसकी बराबरी अन्य कोई स्थान नहीं कर सकता :

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥

(पन्ना १३६२)

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ की गई कीर्तन की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए पंचम पातशाह जी ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में कीर्तन की चौकियाँ प्रारंभ की, जिसमें गुरबाणी का कीर्तन गायन किया जाने लगा। कलियुग के भयानक समय में कीर्तन करना सभी साधनों में से प्रधान माना गया है :

कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥

(पन्ना १०७५)

इसी लिए सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में गुरबाणी का कीर्तन होता रहता है।

इसके साथ सतिगुरु जी ने गुरबाणी का संपादन कर (आदि) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करवाया। दिन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में प्रकाश होता और रात को सुख-आसन कर 'कोठा साहिब' में ले जाया जाता। यह मर्यादा अब भी निरंतर चल रही है।

कुदरत के बनाए दिन और रात, आठ पहर अथवा चौबीस घंटे के होते हैं। इस दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में निभाई जाने वाली धार्मिक मर्यादा की संज्ञा 'आठ पहरी मर्यादा' है, जो दर्शनी ड्योढ़ी के किवाड़ बंद होने से लेकर खुलने तक और खुलने से लेकर बंद होने तक के समय में श्री दरबार साहिब के अंदर तथा बाहर (सेवा, सिमरन, पाठ, कीर्तन, अरदास आदि) हर मौसम में निरंतर चलती रहती है।

दर्शनी ड्योढ़ी के किवाड़ शीत ऋतु में लगभग पाँच घंटे बंद और उन्नीस घंटे खुले तथा ग्रीष्म ऋतु में लगभग तीन घंटे बंद और इक्कीस घंटे खुले रहते हैं, परंतु श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की मर्यादा में कोई तबदीली नहीं होती। यह प्रत्येक माह और प्रत्येक ऋतु में एक समान निभाई जाती है।

*एल-६/९०५, गली नं. ३/४, न्यू शहीद ऊधम सिंघ नगर, श्री अमृतसर—१४३००६, फोन : ९७७९६-०८०५०

इसका विवरण इस प्रकार है :–

समय-सारणी

संख्या	समय	महीना	से	तक
१.	अचल समय	ज्येष्ठ, आषाढ़	प्रातः २:००	रात्रि ११:००
२.	चल समय	सावन	प्रातः २:१५	रात्रि १०:४५
		भादों	प्रातः २ :३०	रात्रि १०:३०
		आश्विन	प्रातः २:४५	रात्रि १०:१५
३.	अचल समय	कार्तिक, मार्गशीर्ष,		
		पौष, माघ	प्रातः ३:००	रात्रि १०:००
४.	चल समय	फाल्गुन	प्रातः २:४५	रात्रि १०:१५
		चैत्र	प्रातः २:३०	रात्रि १०:३०
		वैशाख	प्रातः २:१५	रात्रि १०:४५

समय-परिवर्तन के साथ-साथ रागी जत्थों की ड्यूटी और चौकियों का समय भी घटता- बढ़ता रहता है।

(अ) बंद किवाड़ के समय की मर्यादा

बंद किवाड़ के समय सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के अंदर की सेवा दो पड़ाव में की जाती है। पहले पड़ाव में सफ़ाई की (सूखी) सेवा और दूसरे पड़ाव में स्नान की सेवा होती है, जो दो जत्थों द्वारा की जाती है।

सफ़ाई की सेवा

श्री दरबार साहिब में समाप्ति के उपरांत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का स्वरूप बाहर जाते ही पश्चिमी किवाड़ बंद हो जाता है और पालकी साहिब के दर्शनी ड्योढ़ी में से गुजरने के पश्चात् इसके किवाड़ भी बंद हो जाते हैं और (पुल पर चोबदार दरबान) तैनात रहते हैं।

अंदर दोनों फर्राश और उनके सहायक दो सेवादार तथा सफ़ाई की सेवा करने वाले जत्थे के सिंघ रह जाते हैं, जो फर्राश की निगरानी में सेवा में लग जाते हैं। सबसे पहले सिंहासन, साज आदि उठा कर कोठरी में टिका दिये जाते हैं। फिर बिछाई वाली सफ़ेद चादरें उठा कर, झाड़ कर और तह लगा कर धोने के लिए भेज दी जाती हैं। सिंहासन वाली सारी बिछाई भी भेजी जाती है। ग़लीचे उठा कर और उनका गोल बना कर कोठरी

में रखे जाते हैं। बाहरी ग़लीचे भी गोल बना कर एक तरफ़ रखे जाते हैं।

पुल पर शेष बची संगत उत्तरी दरवाज़े के माध्यम से अंदर आकर और दर्शन कर बाहर चली जाती है। फर्राश श्रद्धालुओं की इच्छा-पूर्ति के लिए अरदास करते हैं।

सिंहासन की पुनः तैयारी

सुनहरी पायों वाला रेशमी निवार से बुना हुआ मंजी साहिब, जिस पर उसके आकार की चादर, उस पर गद्दा, उस पर दोहरी सफ़ेद चादर सजा कर चारों पायों से डोरी (सेजबन्द) के साथ कस कर बाँध दिया जाता है। यह डोरी ठोस रेशमी धागे की बनी होती है और प्रत्येक डोरी के सिरे पर, प्रत्येक पाये के साथ अन्य दो-दो सुनहरी डोरी लगी होती हैं।

मंजी साहिब की बिछाई को खोल कर अच्छी तरह साफ़ किया जाता है। इसकी निवार कसी जाती है। इसकी दोनों चादरें बदली जाती हैं और फिर इसे पहले की तरह तैयार किया जाता है अर्थात् इसकी पुनः तैयारी की जाती है। इसे सतिगुरु जी का सुंदर सिंहासन कहा जाता है। इसे तैयार करने के पश्चात् कोठरी में टिकाया जाता है। चादर पर रेशमी रुमाला बिछा कर, फिर उस पर इसे रखा जाता है।

चाँदनी (चँदोवा) उतारना

सुंदर चाँदनी, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर लगी होती है, के दरमियान एक बड़ा और सोने का वज़नदार छब्बा टँगा होता है, जो सतिगुरु जी के स्वरूप पर लटकता रहता है। प्रवेश द्वार वाली दिशा में चाँदनी पर १३ स्वर्ण छब्बे लटकते हैं, जिनमें से मध्य वाला छब्बा बड़ा होता है। इनके अलावा १२ चंद (चंद्र) आदि भी टँगे होते हैं। ये सभी शुद्ध सोने के होते हैं। चाँदनी पर सामने एक सुंदर सुनहरी कढ़ाई वाली पट्टी बाँधी जाती है, जिस पर गुरबाणी की पंक्ति सुनहरी अक्षरों में लिखी होती है। इसे पिन लगा कर इसके बल निकाले जाते हैं, ताकि गुरबाणी की पंक्ति के दर्शन अच्छी तरह से हो सकें।

स्टूल का प्रयोग कर सभी छब्बे आदि उतार कर और कपड़े द्वारा साफ़ कर सुंदर बक्से में संभाले जाते हैं। तत्पश्चात् फर्श और प्रकाश-स्थान के पीछे की तरफ पीतल के जंगले पर चादरें बिछा कर, चारों कोनों के दोनों तरफ से रस्सियाँ खोल कर, चाँदनी को धीरे-धीरे उतार कर, बिछी हुई चादरें ऊपर रख कर, अच्छी तरह से झाड़ कर और तह लगा कर ऊपरी सफ़ेद चादर, सुनहरी पट्टी के सहित फर्राशखाने भेज दिया जाता है। इसके साथ ही दर्शनी रुमाले भी भेजे जाते हैं।

जो चाँदनी नयी लगाई जाती है उसके साथ का ही छः दर्शनी रुमालों का सेट भी पेटी में रख लिया जाता है। इसमें सुख-

आसन हुए स्वरूप पर सजाने वाला रुमाला भी होता है।

चाँदनी (चंदोवा) चढ़ाना

नयी चाँदनी खोल कर, अच्छी तरह से झाड़ कर चारों कोनों और दोनों तरफ के कड़ों में रस्सियों के साथ बांधते समय, चाँदनी के मध्य टँगे हुए कड़े में धागे के साथ बँधी साहल टाँग कर चाँदनी के सामने फर्श वाली जगह से केंद्रीय स्थान की निशानदेही लेकर सभी रस्सियाँ बाँध दी जाती हैं। इसके पश्चात् चाँदनी पर सफ़ेद चादर भी बाँधी जाती है। सुनहरी पट्टी, छब्बे, चंद्र आदि भी बाँध दिए जाते हैं। चाँदनी उतारते वक्त भी फर्श और जंगले पर चादरें बिछाई जाती हैं, जिस कारण चाँदनी ज़मीन पर स्पर्श नहीं करती। यह सब सम्मान हेतु किया जाता है।

अंदर से बारीक झाड़ू के साथ सफ़ाई की जाती है। दीवार, पंखे, बिजली के झाड़ आदि की सफ़ाई कपड़े द्वारा की जाती है। पीतल के जंगले बरासो से साफ़ कर चमकाए जाते हैं। बाहरी दीवारों, परिक्रमा के पुल पर जंगलों की सफ़ाई की सेवा की जाती है। जब सफ़ाई का सारा कार्य संपूर्ण हो जाता है तो कड़ाह प्रसाद बाटों (बड़े बरतन) में डाल कर सजाया जाता है। इस सब सेवा के दौरान गुरमुख प्यारे ऊँची ध्वनि और जोड़ियों में इन शब्दों का गायन बड़े प्रेम सहित करते रहते हैं— ''कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ॥'' . . . और ''डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ॥'' . . . आदि। सभी गुरमुख प्यारे मिल कर अनंदु साहिब की छः पउड़ियों का पाठ करते हैं।

पहली अरदास : फर्राश अरदास आरंभ कर आखिर में निम्न शब्द कहते हैं :—

''धन्य धन्य श्री गुरु रामदास जी ! आप जी के पवित्र स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब जी में समाप्ति के पश्चात् सफ़ाई की सेवा संपूर्ण हुई। गुरमुख परिवार की तरफ से चाँदनी और रुमाले भेंट हुए। सेवा करने वाले सज्जनों की सेवा स्वीकार करना ! अनंदु साहिब का पाठ करते समय हुई भूल आदि क्षमा कर देना ! प्रबंध और संगत की तरफ से भेंट कड़ाह प्रसाद आप जी के दर स्वीकार हो जी !''

अरदास के पश्चात् कड़ाह प्रसाद वितरित किया जाता है। इसके साथ ही सफ़ाई वाले पहले जत्थे के सभी सिंघ और समूची संगत बाहर आ जाती है तथा गुरु-दरबार के चारों किवाड़ बंद कर दिए जाते हैं। अंदर केवल दोनों फर्राशों के दोनों सहायक सेवादार ही रह जाते हैं। दोनों फर्राश आगे होने वाली तीन पहरे के स्नान की सेवा की तैयारी के लिए अपने कमरे में चले जाते हैं।

सुखमनी साहिब का पहला पाठ : दर्शनी ड्योढ़ी के सामने बैठ कर संगत अति प्रेम

सहित सुखमनी साहिब का पाठ करती है।

तीन पहरे के स्नान की सेवा : तीन पहरे के स्नान की सेवा में शामिल होने के लिए दूसरे जत्थे के सिंघ तथा अन्य अमृतधारी गुरमुख प्यारे समय पर दर्शनी ड्योढ़ी के सामने पहुँच जाते हैं और चोबदार दर्शनी ड्योढ़ी के किवाड़ की खिड़की के माध्यम से सभी को अंदर भेजते हैं। इसके साथ ही दोनों फर्राश भी अंदर पहुँच जाते हैं। गुरु-दरबार के चारों किवाड़ खोल कर अंदर व बाहर से सभी जंगले हटा कर बाहर खड़े कर दिए जाते हैं। स्नान के लिए दूध तथा अमृत जल की बालटियां 'हरि की पौड़ी' से भर कर दरबार में रखी जाती हैं।

दूसरी अरदास : फर्राश स्नान की सेवा प्रारंभ करवाने के लिए अरदास करते हैं।

स्नान : सबसे पहले सुनहरी जंगले के अंदरूनी हिस्से का स्नान दूध के साथ करा कर बाद में अमृत जल से करवाया जाता है। तत्पश्चात् श्री हरिमंदर साहिब के शेष अंदरूनी हिस्से एवं संगमरमर की दीवारों का स्नान भी करवाया जाता है। फिर गुरु-दरबार की बाहरी दीवारों, परिक्रमा और पुल का स्नान करवाया जाता है। लकड़ी के स्टूल आदि का स्नान भी करवाया जाता है। कड़ाह प्रसाद के बर्तन भी साफ़ किए जाते हैं। फिर फर्श और दीवारों को अंदर व बाहर से तौलिए का इस्तेमाल कर शुष्क किया जाता है। तौलिए प्रकाश-स्थान के लिए अलग, शेष भीतरी स्थान के लिए अलग तथा परिक्रमा व पुल के लिए अलग इस्तेमाल किए जाते हैं।

इसके पश्चात् भीतरी और बाहरी सभी जंगले अपनी-अपनी जगह पर लगा दिए जाते हैं।

बिछाई की सेवा : फिर बिछाई की सेवा आरंभ हो जाती है, जो प्रकाश-स्थान, गुरु-दरबार के बाकी के हिस्से में और बाहर की की जाती है।

सिंहासन की बिछाई : सुनहरी जंगले के अंदर बड़ा ग़लीचा, उस पर उससे बड़ी सफ़ेद चादर बिछा कर और ग़लीचा चारों तरफ से उठा कर, चादर का अतिरिक्त हिस्सा उसके नीचे दबा कर, चादर की तह को उचित ढंग से मोड़ कर तथा नीचे दबा कर सीधा कर बिछा दिया जाता है।

उस पर सिंहासन वाली जगह पर छोटा ग़लीचा और उस पर रेशमी चादर बिछाई जाती है।

उस पर मख़मल के तिल्ले और सलमे की कढ़ाई वाली मसनद (सिरहाना) बिछाई जाती है, जिसका पिछला हिस्सा सिंहासन के सामने वाले दोनों पायों के नीचे होता है और शेष आगे बढ़ी हुई होती है। उस पर फूलों

वाली रेशमी चादर के साथ दसूती चादर जोड़ कर बिछाई जाती है, जो मसनद के मध्य तक होती है।

इस सारी बिछाई के ऊपर मंजी साहिब के नीचे दोहरी रेशमी चादर बिछाई जाती है। एक प्लास्टिक की चादर इस पर बिछाई जाती है, जिस पर दोनों तरफ दायें और बायें फूलों के सेहरे रखे जाते हैं। प्लास्टिक की एक और चादर मसनद के ऊपर बिछाई जाती है।

सिंहासन सजाना : प्रकाश-स्थान वाली सारी बिछाई जब मुकम्मल रूप से बिछ जाती है, तब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के लिए पुनः तैयार किया सुंदर सिंहासन अति सम्मान सहित सजाया जाता है। तीनों ही सिरहाने (तकिए) उतार कर एक सफ़ेद चादर दोहरी कर सिंहासन के अर्ध से लेकर सामने तक बिछा कर मसनद पर सजा दिए जाते हैं।

सेहरे सजाना : सिंहासन के आगे मसनद पर फूलों के सेहरे सजाए जाते हैं।

गुलदस्ते सजाना : पाँच गुलदस्ते/फूलदान मसनद पर और दो सुनहरी जंगले के दोनों कोनों में तथा एक कीर्तनी जत्थे के सामने (कुल आठ) रखे जाते हैं, जिनमें इकट्ठा किए फूलों के गुच्छे सजाए जाते हैं। इनमें से मध्य वाला मसनद वाला गुलदस्ता भाई वीर सिंघ जी की कोठी लारेंस रोड, श्री अमृतसर साहिब से उनके जीवन-काल से आ रहा है और शेष गुलदस्ते श्री दरबार साहिब के माली लेकर आते हैं।

श्रीसाहिब सजाना : दो श्रीसाहिब, जिनके मुट्ठे और म्यान सुनहरी हैं, में से एक मसनद के ऊपर और दूसरा सिंहासन के नीचे सजाए जाते हैं। गुरु-दरबार में शस्त्र सजाना सिक्खी रिवायत है।

अन्य बिछाई : सिंहासन के पीछे की तरफ़ लंबे तथा कम चौड़ाई वाले ग़लीचे पर सफ़ेद चादर बिछा कर चारों तरफ से नीचे मोड़ कर बिछाई जाती है और बिलकुल मध्य में छोटा ग़लीचा सफ़ेद चादर के साथ ढक कर बिछाया जाता है, जिस पर ग्रंथी सिंघ बैठते हैं। इसके दायें और बायें- दो चौरबरदार (चंवरबरदार) बैठते हैं, जो दोनों तरफ से श्रद्धालुओं से सेहरे, फूल और रुमाले लेकर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पर डाल कर और उतार कर, रुमाले एक तरफ़ रख लेते हैं और सेहरे आदि प्रसाद रूप में वापस करते हैं।

मसनद तक की बिछाई के सामने एक लम्बा और कम चौड़ा ग़लीचा बिछा कर, उसे सफ़ेद चादर के साथ ढक कर तथा मोड़ कर बिछाया जाता है, जिस पर अरदासिए सहित सेवादार अपनी ड्यूटी करते हैं।

मसनद और अरदासिए की बिछाई के

मध्य एक सफ़ेद चादर बिछाई जाती है, जिस पर संगत माया (धन) भेंट करती है। इसे 'खजाने वाली चादर' कहा जाता है। उत्तरी दरवाज़े की तरफ दो ग़लीचों पर सफ़ेद चादरें आगे-पीछे बिछायी जाती हैं, जिन पर आगे रागी जत्था और पीछे गुरसिक्ख बैठते हैं।

दक्षिणी दरवाज़े की तरफ कोठरियों वाला रास्ता छोड़ कर चादर सहित लंबा ग़लीचा महिलाओं के बैठने के लिए बिछाया जाता है।

कड़ाह प्रसाद की देग सजाने के लिए प्लास्टिक कवर बिछाया जाता है।

इसके अलावा अंदर और बाहर चादरों के अलावा ग़लीचे संगत के बैठने के लिए बिछाए जाते हैं।

जब बिछाई का सारा कार्य पूरा हो जाता है तो कीर्तन वाले हारमोनियम, अरदासिए का सामान, बर्तन, माइक आदि अपनी-अपनी जगह पर टिकाए जाते हैं। इस सेवा के दौरान जत्थे के सिंघ कंठ में ही बाणी पढ़ते हुए सेवा करते हैं और सारा सेवा-कार्य इशारों द्वारा ही करते हैं, वार्तालाप नहीं करते।

मसनद की बिछाई करते समय और सिंहासन सजाते समय चारों तरफ से पूरी तरह से माप कर सारा कार्य सम्पन्न किया जाता है। मापने के लिए लकड़ी की एक छड़ी, जिस पर माप के निशान लगे होते हैं, का प्रयोग किया जाता है। मसनद की सफ़ाई मोरपंख झाड़ू द्वारा की जाती है।

बिछाई का कार्य सम्पन्न होने पर सेवा करने वाले गुरमुख प्यारे बैठ कर सिमरन करते हैं। किवाड़ खुलने से आधा घंटा पहले श्री दरबार साहिब और डेरा बाबा शाम सिंघ जी से आया कड़ाह प्रसाद सजाया जाता है तथा फर्राश अनंदु साहिब की छः पउड़ियों का पाठ करते हैं।

तीसरी अरदास : फर्राश अरदास करते समय आखिर में ये यह शब्द बोलते हैं :-

''धन्य धन्य श्री गुरु रामदास जी! आप जी के महान स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में तीन पहरे के स्नान और बिछाई की सेवा प्रेमियों द्वारा की गई है। आप जी ने स्वीकार करना! अनंदु साहिब के पाठ जी की अरदास है जी! श्री दरबार साहिब, डेरा बाबा शाम सिंघ जी तथा प्रेमियों की तरफ से भेंट कड़ाह प्रसाद आप जी के दर प्रवान होवे जी!''

इसके पश्चात् सेवा करने वाले गुरमुख युगलबंदी में ये शबद पढ़ते हैं :

— *धनु सु वेला जितु दरसनु करणा॥*

(पन्ना ५६२)

— *धंनु धंनु रामदास गुरु*
जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ॥

(पन्ना ९६८)

कड़ाह प्रसाद की देग वितरित की जाती है। शबदों की समाप्ति कर सभी प्रेमी बाहर आ जाते हैं।

सेवा के लिए नियम : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में रात्रि के समय सेवा करने वाले प्रेमियों के लिए नियम इस प्रकार हैं :—

सफ़ाई की सेवा वाले पहले जत्थे के सिंघ श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के सुनहरी जंगले के अंदर की सारी सेवा करते हैं, परंतु गुरसिक्ख केवल अंदर की शेष और बाहरी स्थानों की सेवा ही कर सकते हैं।

तीन पहरे के स्नान की सेवा दूसरे जत्थे के सिंघ और ककारधारी गुरमुख प्यारे दाढ़ी खोल कर, लंबे चोले पर गातरे वाली कृपाण (बाहर से) पहन कर, कमरकस्सा लगा कर और मात्र कछहिरा (पाजामा आदि नहीं) पहन कर सेवा में शामिल हो सकते हैं।

कोटि-कोटि प्रणाम : पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान वाला शिरोमणि सिक्ख तीर्थ सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब है। यहाँ रात्रि के समय होने वाली सेवा विशेष उल्लेखनीय है। गुरु नानक नाम लेवा सिक्ख सेवा, सिमरन, नम्रता, श्रद्धा, विश्वास आदि गुणों से लबरेज़ होते हैं। सेवा करते हुए वे साथ-साथ सिमरन भी करते रहते हैं। उनमें नम्रता भी अति दर्जे की होती है। वे गुरु-घर में पूरी श्रद्धा रखते हैं। उनका विश्वास भी अटूट होता है, जिस कारण वे गुरु, गुरु-स्थान और गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का बहुत अदब एवं सत्कार करते हैं। उपरोक्त गुण श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में सेवा करने वाले सभी गुरसिक्खों में पूर्ण रूप से देखे जा सकते हैं। वे गुरु-घर में सुशोभित गुरु से सम्बन्धित हर वस्तु का हद से ज्यादा सम्मान और अदब करते हैं। वे सबसे पहले गुरु-स्थान को नत्मस्तक होते हैं और फिर गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं के दर्शन करते समय अभिवादन करते हैं। पूर्ण अदब एवं सत्कार के साथ सेवा कर उस गुरु- वस्तु को पहली जगह रख कर और माथा टेक कर अपने आप को भाग्यशाली समझते हैं। ऐसे गुरु-समर्पित गुरसिक्खों को कोटि-कोटि प्रणाम!

ख़बरनामा

गुरुद्वारा भक्त कबीर जी, मगहर में विशाल गुरमति समागम आयोजित सराय और लंगर हॉल का किया गया शिलान्यास

श्री अमृतसर साहिब : ५ जून : सिक्ख पंथ की नुमाइंदा संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा उत्तर प्रदेश सिक्ख मिशन, हापुड़ के माध्यम से संगत के सहयोग से भक्त कबीर जी के जन्म दिवस के अवसर पर गुरुद्वारा भक्त कबीर जी, मगहर (जिला गोरखपुर) में विशाल गुरमति समागम करवाया गया। समागम में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, धर्म प्रचार लहर के प्रमुख और शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजायब सिंघ अभ्यासी और सचिव स. बलविंदर सिंघ कहालवां ने विशेष रूप से शमूलियत की। इस अवसर पर संगत की माँग के अनुसार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने संगत के ठहरने के लिए सराय (यात्री निवास) और लंगर हॉल का शिलान्यास किया, जिसकी कार सेवा बाबा कशमीर सिंघ भूरी वाले द्वारा करवाई जायेगी।

समागम के दौरान संबोधित करते हुए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि शिरोमणि भक्त के रूप में सम्मानित भक्त कबीर जी ने क्रांतिकारी उपदेशों के माध्यम से धार्मिक पतन पर करारी चोट की। भक्त कबीर जी ने मानवता को सत्य का उपदेश देते हुए समाज में आ चुकी कुरीतियों का विरोध किया और प्रभु-भक्ति के लिए प्रेरित किया। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने संगत को भक्त कबीर जी के जन्म दिवस की बधाई देते हुए उनके उपदेशों पर चलने की अपील की। एडवोकेट धामी ने इस अवसर पर उतर प्रदेश में चल रहे धर्म प्रचार कार्यों पर संतोष प्रकट करते हुए इसे भविष्य में निरंतर जारी रखने की वचनबद्धता व्यक्त की और आवश्यकतानुसार प्रचारक जत्थे भेजे जाने का भी वर्णन किया।

इस अवसर पर भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां ने भी संबोधित किया। इससे पहले धर्म प्रचार कमेटी के प्रचारक भाई

बलदेव सिंघ ओगरा और ढाडी ज्ञानी गुरमीत सिंघ ने संगत के समक्ष गुरमति विचार और सिक्ख इतिहास का व्याख्यान किया।

इस समागम में बाबा सुखविंदर सिंघ कार सेवा भूरी वाले, बीबी परमजीत सिंघ राणा प्रबंधक गुरुद्वारा भक्त कबीर जी, मगहर, बाबा गुरिंदर सिंघ पटना साहिब, स. इंदरजीत सिंघ महासचिव तख़्त श्री पटना साहिब, उ. प्र. सिक्ख मिशन के इंचार्ज स. ब्रिजपाल सिंघ, पूर्व उप सचिव स. राम सिंघ भिंडर, एसडीओ स. अमनदीप सिंघ, केंद्रीय गुरुद्वारा बोर्ड जमशेदपुर के प्रधान स. गुरचरन सिंघ (विर्क), उपाध्यक्ष स. कुलदीप सिंघ, महासचिव स. सुरजीत सिंघ, स. भगवान सिंघ, स. सोहण सिंघ, बाबा जग्गा सिंघ, बाबा हरी सिंघ, बाबा करन सिंघ, बाबा रतन सिंघ, बाबा युद्धवीर सिंघ, बाबा गुरवंत सिंघ, बाबा चमकौर सिंघ, ज्ञानी सतनाम सिंघ, स. गुरजिंदर सिंघ, बाबा भान सिंघ, स. हरमीत सिंघ, स. लखबीर सिंघ, ज्ञानी जसजीत सिंघ लखनऊ, डॉ. दविंदर सिंघ, स. गुरदीप सिंघ आदि उपस्थित थे।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर जून 1984 ई. के शहीदों की याद में शहीदी समागम आयोजित

श्री अमृतसर : ६ जून : जून, १९८४ ई. में भारत की तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर किये गए फ़ौजी आक्रमण के दौरान शहीद हुए संत जरनैल सिंघ ख़ालसा भिंडरांवाले, भाई अमरीक सिंघ, बाबा ठारा सिंघ, और जनरल शबेग सिंघ सहित अन्य शहीदों की याद में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा सालाना शहीदी समागम आयोजित किया गया। श्री अकाल तख़्त साहिब पर आयोजित इस समागम के अवसर पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, बाबा निहाल सिंघ तरना दल हरीआंवेलां, दल बाबा बिधी चंद संप्रदाय के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, पूर्व जत्थेदार भाई जसबीर सिंघ खालसा सहित कई पंथक शख़्सियतों ने शमूलियत की। इस अवसर पर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग

डाले गए और रागी जत्थों ने गुरबाणी-कीर्तन किया।

अपने संबोधन में श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने सिक्ख-शक्ति को संगठित करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि जून १९८४ ई. के घल्लूघारे को सिक्ख कभी नहीं भूल सकते। यह घल्लूघारा सिक्खों के हृदय पर लगे गहरे ज़ख़्म हैं। उन्होंने कहा कि हम सरकारों को स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि १९८४ ई. का घल्लूघारा सिक्खों की कमज़ोरी नहीं है, बल्कि इसे याद कर कौम और भी मज़बूत होती है। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने कहा कि भारत की तत्कालीन सरकार द्वारा किये इस जुल्म के इंसाफ़ की सरकारों से कौम को कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए, बल्कि एकजुट होकर आत्मविश्लेषण करते हुए सिक्ख शक्ति को मज़बूत करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अब तक कई सरकारें बनीं, मगर सिक्खों को किसी ने भी न्याय नहीं दिया। सिक्ख-शक्ति एकजुट होगी, तो सरकारें ख़ुद चल कर सिक्खों के पास आएंगी।

अपने संबोधन के दौरान जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने सिक्ख जत्थेबंदियों, महापुरुषों, पूर्व जत्थेदारों और कौम के प्रचारकों से अपील की कि वे काफ़िले बना कर गाँव-गाँव में सिक्खी प्रचार की लहर सृजित करने के लिए आगे आएं। यह समय कौम को आपसी मतभेद भुला कर श्री अकाल तख़्त साहिब के नेतृत्व में संगठित होने का है। उन्होंने कहा कि आज नशों के माध्यम से नौजवानी को बर्बाद किया जा रहा है। इसके साथ ही सोशल मीडिया पर गुमराहकुन सामग्री द्वारा नौजवानों की मानसिकता बदली जा रही है। हमें इस घटनाक्रम की तरफ ध्यान देना पड़ेगा और सबको साथ लेकर चलना पड़ेगा। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने सिक्ख संस्थाओं को मज़बूत करने के लिए भी संदेश दिया। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्थाएं सिक्ख-शक्ति का स्रोत हैं, परन्तु खेद की बात है कि गत समय में कुछ सिक्ख संस्थायें सरकारी हाथों में चली गई हैं। इसकी तरफ कौम को ध्यान देना पड़ेगा, ताकि सिक्ख संस्थाएं सिक्खों के प्रभाव में ही रहें। ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने घल्लूघारे के समूह शहीदों को श्रद्धा-सुमन भेंट करते हुए संत जरनैल सिंघ ख़ालसा भिंडरावाले, भाई अमरीक सिंघ, बाबा ठारा सिंघ और जनरल शबेग सिंघ को विशेष रूप से याद किया।

समागम के दौरान तख़्त श्री केसगढ़ साहिब

के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने भी संगत के समक्ष विचार व्यक्त किये और जून, १९८४ ई. के घल्लूघारे को उस समय की कांग्रेस सरकार की मानवता-विरोधी कार्यवाही बताया। उन्होंने कहा कि जो ज़ुल्म उस वक्त भारत सरकार ने सिक्खों पर किया, उसने अब्दाली द्वारा किये ज़ुल्मों को भी पीछे छोड़ दिया। सरकार द्वारा दिए ये ज़ख़्म खालसा पंथ के दिल से कभी नहीं मिट सकते।

इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी और जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने संत बाबा जरनैल सिंघ ख़ालसा भिंडरावाले के सुपुत्र भाई ईशर सिंघ, शहीद भाई अमरीक सिंघ की सुपुत्री बीबी सतवंत कौर, भ्राता भाई मनजीत सिंघ भूराकोहना, शहीद भाई नछत्तर सिंघ पहिलवान के सुपुत्र भाई भुपिंदर सिंघ पहिलवान, फेडरेशन के नेता स. कंवरचढ़त सिंघ सहित शहीदों के कई पारिवारिक सदस्यों को गुरु-बख़शीश सिरोपायो देकर सम्मानित किया गया। सिक्ख संघर्ष से सम्बन्धित अन्य शख़्सियतों को भी इस दौरान सिरोपायो देकर नवाजा गया।

समागम के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ, ज्ञानी सुलतान सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के हैंड ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमुख सिंघ और ज्ञानी मलकीत सिंघ, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. अवतार सिंघ रिआ, कार्यकारिणी सदस्य स. परमजीत सिंघ खालसा, स. मलकीत सिंघ चंगाल, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई राम सिंघ, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्डु, एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, स. जगसीर सिंघ मांगेआणा, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. सुखवरश सिंघ (पन्नू), स. बलदेव सिंघ चूंघां, स. अमरीक सिंघ विछोआ, बाबा चरनजीत सिंघ जस्सोवाल, स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, बाबा टेक सिंघ, सीनियर अकाली नेता स. विरसा सिंघ वलटोहा, गुरुद्वारा यादगार शहीदां के मुख्य सेवक भाई सुखविंदर सिंघ अगवान, बाबा सुखविंदर सिंघ मलकपुर, स. अमरबीर सिंघ ढोट, सांसद स. सिमरनजीत सिंघ (मान), स. ईमान सिंघ (मान), स. नरायण सिंघ चौड़ा, स. कंवरपाल सिंघ, भाई जसबीर सिंघ घुंमण, स. हरसिमरन सिंघ, सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी),

अतिरिक्त सचिव स. सुखमंदर सिंघ, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. बिजै सिंघ, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. सिमरजीत सिंघ, मैनेजर स. सतनाम सिंघ मांगासराए, उप सचिव स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, स. गुरचरन सिंघ कुहाला, स. कुलदीप सिंघ रोडे, स. जसविंदर सिंघ जस्सी, प्रो. सुखदेव सिंघ, स. शाहबाज सिंघ, स. परमजीत सिंघ, पूर्व सचिव स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, डॉ. अमरजीत सिंघ, स. उपकार सिंघ (संधू), भाई बलवंत सिंघ गोपाला आदि उपस्थित थे।

जून 1984 ई. के घल्लूघारे के दौरान ज़ख़्मी हुए पवित्र स्वरूप के संगत को करवाए गए दर्शन

जून १९८४ ई. में श्री अकाल तख़्त साहिब और सचखंड श्री हरिमंदर साहिब पर तत्कालीन भारत सरकार द्वारा किए गए फ़ौजी हमले के समय सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में गोली लगने के कारण ज़ख़्मी हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप को संगत को दर्शन करवाने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब के निकट गुरुद्वारा शहीदगंज बाबा गुरबख़्श सिंघ जी में सुशोभित किया गया। इस ज़ख़्मी हुए पावन स्वरूप के साथ इसमें लगी गोली भी संगत को दिखाई गई। यह पावन स्वरूप गुरुद्वारा साहिब में सुशोभित करने के लिए सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ ने सेवा निभाई, जबकि इस सम्बंध में संगत को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी और श्री अकाल तख़्त साहिब के हेॅड ग्रंथी ज्ञानी गुरमुख सिंघ ने जानकारी दी।

इस अवसर पर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने कहा कि जब तक दुनिया रहेगी, कांग्रेस सरकार द्वारा सिक्खों पर ढाया गया कहर याद किया जाता रहेगा। प्रत्येक वर्ष जून महीने में सिक्ख कौम की भावनाएं गहरी पीड़ा में से गुज़रती हैं और प्रत्येक संजीदा मनुष्य सरकार की इस घटिया हरकत की निंदा करता है। एडवोकेट धामी ने कहा कि जून, १९८४ ई. में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप को ज़ख़्मी करना सिक्ख मानसिकता को गहरा ज़ख़्म देना है। उन्होंने घल्लूघारे के समूह शहीदों को कौम के संघर्षशील नायक करार देते हुए कौम की चढ़दी कला की कामना की।

केलिफोर्निया की स्टेट सेनेट की तरफ से सिक्खों को हेलमेट पहनने से छूट देने का एडवोकेट धामी ने किया स्वागत

श्री अमृतसर : ६ जून : अमेरिका के केलिफोर्निया में स्टेट सेनेट की तरफ से सिक्खों को हेलमेट पहनने से छूट देने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि यह सिक्ख कौम के लिए ख़ुशी की ख़बर है, जिसका दूसरे देशों पर भी प्रभाव पड़ेगा। एडवोकेट धामी ने कहा कि दसतार सिक्ख आचरण का अहम अंग है और सिक्ख को हेलमेट पहनने के लिए विवश नहीं किया जा सकता। उन्होंने केलिफोर्निया की सेनेट के सदस्य बरियन डाहल द्वारा सिक्खों की आवाज़ को सेनेट में पेश करने के लिए धन्यवाद किया और आशा व्यक्त की कि यह बिल असेंबली में जल्द पास हो जायेगा।

ज्ञानी रघबीर सिंघ श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार तथा ज्ञानी सुलतान सिंघ तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार नियुक्त

श्री अमृतसर : १६ जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी की अध्यक्षता में कार्यकारिणी कमेटी की विशेष सभा के दौरान तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार के तौर पर सेवा निभा रहे सिंघ साहिब ज्ञानी रघबीर सिंघ को श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर साहिब का जत्थेदार नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही वे सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब के मुख्य ग्रंथी के तौर पर भी सेवा निभाएंगे। कार्यकारिणी कमेटी की सभा में सिंघ साहिब ज्ञानी सुलतान सिंघ को तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब का जत्थेदार नियुक्त करने का भी फ़ैसला लिया गया है।

सभा के बाद मीडिया के साथ बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, क्योंकि श्री

अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार थे, इसलिए आज कार्यकारिणी कमेटी ने ज्ञानी रघबीर सिंघ को बतौर जत्थेदार नियुक्त करने का फ़ैसला लिया है। उन्होंने बताया कि सिक्ख कौम द्वारा कार्यकारी जत्थेदार की जगह बतौर जत्थेदार नियुक्ति करने की लगातार माँग की जा रही थी और जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ की तरफ से भी इसके लिए सहमति प्रकट की गई है।

एडवोकेट धामी ने बताया कि कार्यकारिणी कमेटी ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी सुलतान सिंघ को तख़्त श्री केसगढ़ साहिब का जत्थेदार नियुक्त करने का भी फ़ैसला किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने यह भी बताया कि ज्ञानी रघबीर सिंघ को श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार की सेवा के साथ-साथ सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी की सेवा भी दी गई है। इसी प्रकार ज्ञानी सुलतान सिंघ भी सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में बतौर ग्रंथी के रूप में सेवा जारी रखेंगे। इस अवसर पर एडवोकेट धामी ने बताया कि कार्यकारिणी कमेटी ने ज्ञानी हरप्रीत सिंघ द्वारा श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार के तौर पर निभाई गई सेवाओं की पूर्ण रूप से प्रशंसा भी की है।

कार्यकारिणी कमेटी की सभा में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कायमपुर, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. अवतार सिंघ रिआ, महासचिव भाई गुरचरन सिंघ ग्रेवाल, कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. मोहन सिंघ बंगी, स. जरनैल सिंघ करतारपुर, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाला, स. गुरनाम सिंघ जस्सल, स. परमजीत सिंघ खालसा, स. शेर सिंघ मंडवाला, बाबा गुरप्रीत सिंघ रंधावा, स. भुपिंदर सिंघ असंध, स. मलकीत सिंघ चंगाल, सचिव स. प्रताप सिंघ, उप सचिव स. शाहबाज सिंघ, इंचार्ज स. अज़ाददीप सिंघ आदि उपस्थित थे।

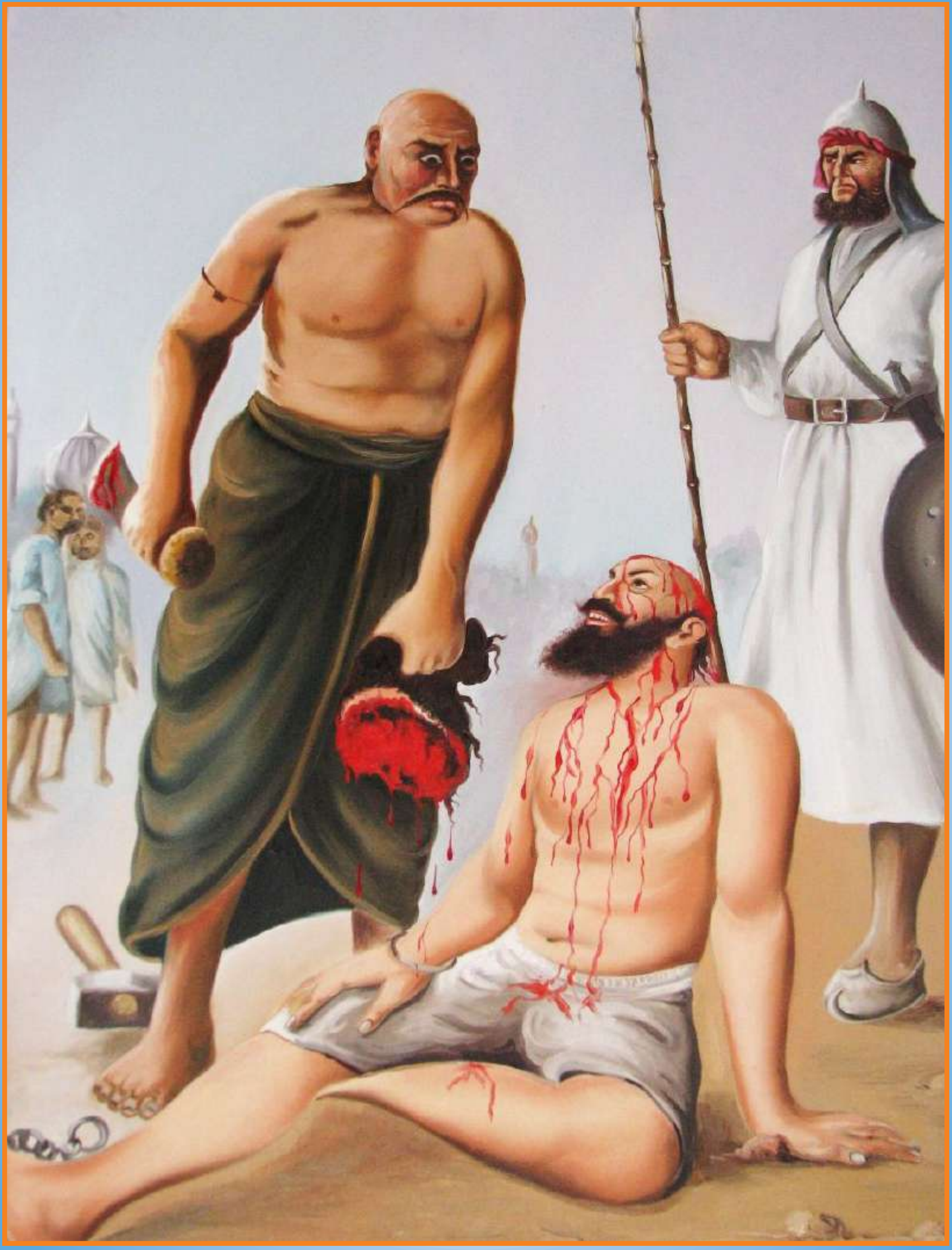

भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतार कर शहीद किये जाने का दृश्य

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN July 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब, श्री अमृतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-7-2023